mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-194 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
14 जुलाई 2024 रविवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

वेकिच को ...
@ पेज 7

चुनाव से पहले जम्मू-कश्मीर के एलजी की शक्तियां बढ़ीं

दिल्ली की तरह अब ट्रांसफर-पोस्टिंग में मंजूरी होगी जरूरी

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल (एलजी) की प्रशासनिक शक्तियां बढ़ा दी हैं।

दिल्ली की तरह अब जम्मू-कश्मीर में राज्य सरकार

- **उमर अदुल्ला बोले-हर चीज के लिए भीख मांगनी पड़ेगी**

एलजी की मंजूरी के बिना अफसरों की पोस्टिंग और ट्रांसफर नहीं कर सकेगी। गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 55 के तहत बदले हुए नियमों को नोटिफाई किया है, जिसमें स्र्र को ज्यादा ताकत देने वाली

धाराएं जोड़ी गई हैं। उपराज्यपाल के पास अब पुलिस, कानून व्यवस्था और ऑल इंडिया सर्विस से जुड़े मामलों में ज्यादा अधिकार होंगे।

न्यूज एजेंसी ने बाद में सूत्रों के हवाले से जानकारी दी कि केंद्र ने सिर्फ व्यापार नियमों के लेनदेन में संशोधन किया गया है। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 में बाकी चीजों का जिक्र पहले से ही था। हालांकि, एजेंसी ने गृह मंत्रालय का जो नोटिफिकेशन जारी किया है, उसमें पहले के प्रावधान और 12 जुलाई को किए गए बदलावों के बीच स्पष्ट अंतर की जानकारी नहीं दी गई है।

ओडिशा गवर्नर के बेटे पर कर्मचारी से मारपीट का आरोप

- **राजभवन के ऑफीसर की शिकायत-स्टेशन लेने कार नहीं भेजी तो लात-घूंसों से पीटा**

पुरी (एजेंसी)। ओडिशा के राजभवन में एक कर्मचारी ने राज्यपाल रघुबर दास के बेटे ललित कुमार और उसके साथियों पर मारपीट के आरोप में शिकायत दर्ज कराई है। कर्मचारी का आरोप है कि उसने ललित को स्टेशन लेने के लिए कार नहीं भेजी थी। इससे नाराज ललित ने अपने साथियों के साथ मिलकर राजभवन में उनकी लात-घूंसों से पिटाई कर दी। शिकायतकर्ता बैकुंठ प्रधान ने 10 जुलाई को राज्यपाल के प्रिंसिपल सेक्रेटरी को लिखित शिकायत सौंपी। उन्होंने कहा- वे ओडिशा राजभवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के दौरे की तैयारी की निगरानी में जुटे थे। 7 जुलाई की रात करीब 12 बजे वह अपने ऑफिस में काम कर रहे थे। तब राज्यपाल का निजी रसोइया आया और उसने ललित से मिलने के लिए कहा। पीड़ित ने बताया कि जैसे ही मैं ललित के पास पहुंचा उन्होंने मुझे गालियां देना शुरू कर दिया। जब मैंने इसका विरोध किया तो उन्होंने मुझे थप्पड़ मारे। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने भागकर छिपने की कोशिश भी की लेकिन सुरक्षा अधिकारियों ने उन्हें ढूंढ़ लिया।

संक्षिप्त समाचार

एनडीए सरकार अस्थिर, कार्यकाल पूरा करना मुश्किल

- ममता बोलीं-सबसे ज्यादा इमरजेंसी मोदी सरकार ने लगाई

मुंबई (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दावा किया कि भाजपा-नेतृत्व

वाली एनडीए सरकार अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएगी, क्योंकि यह सरकार स्थिर नहीं है। जब उनसे ऐसा कहने की वजह पूछी गई, तो उन्होंने कहा कि खेला शुरू हो गया है। यह जारी रहेगा। ममता ने यह बात शुक्रवार को मुंबई में उद्धव ठाकरे से उनके आवास मातोश्री में मुलाकात के दौरान कही। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में वे ठाकरे के लिए प्रचार करेंगीं। शिवसेना और तृणमूल कांग्रेस इंडिया ब्लॉक में साझेदार हैं।

टीम इंडिया ने जिम्बाब्वे को 10 विकेट से दी पटखनी

- 5 मैचों की टी-20 सीरीज जीती, ओपनर्स शुभमन और यशस्वी की फिफ्टी

हरारे (एजेंसी)। भारत ने टी-20 सीरीज के चौथे मैच में जिम्बाब्वे को 10 विकेट से हरा दिया है। इस जीत से टीम ने 5 मैचों की सीरीज में 3-1 की बढ़त के साथ सीरीज भी अपने नाम कर ली है। सीरीज का पांचवां मुकाबला कल 14 जुलाई को खेला जाएगा। भारत ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला लिया। जिम्बाब्वे ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 152 रन बनाए। जवाब में भारत ने 15.2 ओवर में बिना कोई विकेट गंवाए टारगेट हासिल कर लिया।

पहले सिम से हटवाया, फिर ब्लॉक करवा दिया एटीएम

- शहीद अंशुमान के माता-पिता ने बहू पर लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। सियाचिन में आग लगने की घटना में शहीद हुए कैप्टन अंशुमान के माता-पिता ने बहू पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा है कि बेटे के शहीद होने के बाद

उनकी बहू (स्मृति सिंह) ने बेटे का एटीएम कार्ड जोकि उसकी मां इस्तेमाल करती थीं, उसे तक ब्लॉक करवा दिया। इसके अलावा, परिवार द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पोस्टपेड सिम को भी बदलवाकर प्रीपेड करवा दिया। कैप्टन अंशुमान की मां ने दावा किया कि वह अपनी बहू को बर्तन तक नहीं धुलने देती थीं, ताकि उसका हाथ न खराब हो। शहीद कैप्टन अंशुमान के पिता ने बातचीत में कहा, अंशुमान के नाम से सिम था सारे परिवार का जोकि पोस्टपेड था उसे ब्लाक करवा दिया।

गम बांटने के लिए छूट, तो खुशी में क्यों नहीं

बोला बॉबे हाईकोर्ट, बेटे की फीस जमा करने के लिए पिता को दी पैरोल

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाईकोर्ट ने मंगलवार को एक पैरोल याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि जब किसी व्यक्ति को दुख बांटने के लिए पैरोल मिल सकता है। तो खुशियों के लिए भी बराबर के अवसर मिलने चाहिए। कोर्ट विवेक श्रीवास्तव नाम के एक कैदी की याचिका पर सुनवाई कर रहा था। याचिकाकर्ता ने अपने बेटे की ऑस्ट्रेलियाई यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के लिए ट्यूशन फीस और अन्य खर्चों का इंतजाम करने और उसे विदाई देने के लिए पैरोल की मांग की थी।

जस्टिस भारती डांगरे और जस्टिस मंजूषा देशपांडे की बेंच ने कहा कि पैरोल के तौर पर दोषियों को थोड़े समय के लिए सशर्त रिहाई दी जाती है। ताकि वे बाहरी दुनिया से जुड़ सकें और अपनी पर्सनल और पारिवारिक जिम्मेदारियों का ध्यान रख सकें। कोर्ट ने कहा कि पैरोल और फरलो जैसे प्रावधान जेल में बंद लोगों के लिए मानवीय दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए है। कोर्ट ने कहा सजा में सशर्त छूट का उद्देश्य कैदी को जेल जीवन के बुरे प्रभावों से बचाने, मेंटल स्टेबिलटी और भविष्य के लिए उम्मीद बनाए रखने के लिए जरूरी है। दरअसल विरोधी पक्ष के वकील ने दोषी को मिलने वाले पैरोल का विरोध किया था। उनका दावा था कि पैरोल आमतौर पर इमरजेंसी स्थितियों में दिया जाता है। ऐसे फीस का इंतजाम करना और बेटे को विदा करना पैरोल का आधार नहीं बन सकता है।

आरएसएस के साथ मिलकर राजनीति कांग्रेस को बताएगी संविधान भक्षक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा नेतृत्व लोकसभा चुनाव के नतीजों से उबरते हुए अब एनडीए को मजबूत करने के साथ अपनी संगठनात्मक और चुनावी रणनीति को और बेहतर बनाएगा। पार्टी जल्दबाजी में बड़े बदलाव किए बगैर विपक्ष पर आक्रामक रुख बरकरार रखेगी और संविधान के मुद्दे पर कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दलों को कठघरे में खड़ा करने का कोई मौका नहीं छोड़ेगी। भाजपा के संगठन चुनाव की प्रक्रिया जल्द

- **मिशन 2024 के बाद बीजेपी ने बदली अपनी राणनीति, विपक्ष पर आक्रामक रुख बरकरार रखेगी पार्टी**

शुरू होगी और चार राज्यों के आगामी विधानसभा चुनाव उसकी भावी रणनीति के केंद्र में रहेंगे। सूत्रों के अनुसार, तब तक पार्टी केंद्रीय स्तर पर बड़े बदलाव नहीं करेगी। भाजपा को लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों में अपेक्षाकृत कम सफलता मिली है, उन पर खास ध्यान दिया जाएगा। आगामी चार राज्यों के विधानसभा चुनाव तक मौजूदा नेतृत्व को ही बरकरार रखा जाएगा। हालांकि, संगठन चुनाव पूरे होने तक पार्टी संसद सत्र के बाद राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक कर सकती है, जिसमें वह आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर जरूरी फैसला कर सकती है। फिलहाल राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक होने की संभावना कम है। हालांकि जिन राज्यों में संगठन में नए अध्यक्ष बनाए

जाने हैं, उसे जरूर पूरा किया जाएगा। इनमें बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना जैसे राज्य शामिल हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर भी पार्टी पूरी तरह स्पष्ट है और उसके साथ ही उसकी संगठनात्मक रूप से आगे बढ़ेगी। अगले माह होने वाली संघ की बैठक में पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा भी हिस्सा लेंगे।

समान नागरिक संहिता अब और आगे बढ़ेगी

समान नागरिक संहिता को लेकर भाजपा का स्पष्ट मानना है कि उसे आगे बढ़ाया जाएगा। चूंकि राज्यों के द्वारा प्रक्रिया शुरू हो गई है इसलिए इसे उसी तरह से आगे ले जाया जाएगा। पार्टी जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनाव में घाटी में अपनी ताकत बढ़ाने के लिए स्थानीय दलों के साथ तालमेल कर सकती है, लेकिन वह चुनाव में अपनी दम पर ही उतरने की तैयारी में है। पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा है कि संविधान हत्या दिवस मनाने की एक वजह कांग्रेस द्वारा इस देश को गुमराह किया जाना है। कांग्रेस पार्टी लोकसभा चुनाव से लगातार संविधान को मुद्दा बनाकर भाजपा पर हमलावर है, जबकि आपातकाल के जरिए उसी ने संविधान की हत्या की थी। अब पार्टी आक्रामक रूप से इसे लेकर जनता के बीच जाएगी और बताएगी कि कांग्रेस ही संविधान की असली भक्षक है। उसकी कथनी और करनी में कितना अंतर है। उसके साथ खड़े दल इसमें किस तरह भागीदार बन रहे हैं।

उपचुनाव नतीजे

भाजपा को 2 का नुकसान कांग्रेस को 2 का फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश और बिहार समेत 7 राज्यों की 13 सीटों पर हुए विधानसभा उपचुनाव के नतीजे आ गए हैं। सभी

- टीएमसी ने भाजपा की 3 सीटें छीनीं, इंडिया गठबंधन का दिखा जलवा

सीटों पर 10 जुलाई को वोटिंग हुई थी। इनमें से कांग्रेस ने 4, टीएमसी ने 4, भाजपा ने 2, एएपी, डीएमके और निर्दलीय ने 1-1 सीटें जीत ली हैं। इन 13 सीटों में भाजपा के पास 3 सीटें थीं, कांग्रेस के पास 2, टीएमसी के पास 1, जेडीयू 1, आप 1, डीएमके 1, बीएसपी 1 और निर्दलीय के पास 3 सीटें थीं। इस उपचुनाव में भाजपा 2, कांग्रेस 4, टीमएसी 4, जेडीयू 0, आप 1, डीएमके 1, बीएसपी 0 और निर्दलीय को एक सीट मिली है। यानी भाजपा को 1 और जेडीयू को 1 सीट मिलाकर दो सीटों का नुकसान हुआ। कांग्रेस को 2 और टीएमसी को 3 सीटों का फायदा हुआ है। हिमाचल में भाजपा में शामिल हुए 3 में से एक निर्दलीय ही चुनाव जीत पाए, दो हार गए। पंजाब में भी एएपी से आए कैंडीडेट चुनाव हार गए। बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए को सिर्फ दो सीटों पर जीत हासिल हुई है।

अमेरिका में तिब्बत से जुड़े विधेयक को बाइडन ने दी मंजूरी

चीन के विरोध के बावजूद तिबत के शांतिपूर्ण हल पर हुआ हस्ताक्षर

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने चीन के विरोध के बावजूद एक विधेयक पर हस्ताक्षर किया है जो तिब्बत के लिए अमेरिका के समर्थन को बढ़ाता है। इसके साथ तिब्बत की स्थिति और शासन पर विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए चीन और दलाई लामा के बीच बातचीत को बढ़ावा देता है। चीन ने रिजॉल्व तिब्बत एक्ट का विरोध किया था और इसे एक अस्थिरता पैदा करने वाला एक्ट

बताया था। फरवरी में प्रतिनिधि सभा की ओर से इस अधिनियम को पारित किया गया था और मई में सीनेट ने इसे मंजूरी दे दी। अमेरिका का कहना है कि तिब्बत पर चल रहे चीन के कब्जे को शांतिपूर्ण ढंग से हल किया जाना चाहिए। बाइडन ने शुक्रवार देर रात एक बयान में कहा, आज मैंने कानून एस.138 तिब्बत-चीन विवाद के समाधान को बढ़ावा देना अधिनियम पर हस्ताक्षर किए हैं। मैं तिब्बतियों के मानवाधिकारों को आगे बढ़ाने और उनकी विशिष्ट भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए कांग्रेस की द्विदलीय प्रतिबद्धता को साझा करता हूं। बाइडन ने कहा, मेरा प्रशासन पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना से दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के सीधी बातचीत फिर शुरू करने के लिए कहता रहेगा।

2031 तक दुनिया की दूसरी बड़ी-अर्थव्यवस्था बन सकता है भारत

मुंबई (एजेंसी)। भारत को दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए 2048 तक का इंतजार नहीं करना पड़ेगा, बल्कि 2031 में ही देश इस उपलब्धि को हासिल कर सकता है। वहीं, 2060 तक देश में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता है। रिजर्व बैंक ऑफ

- **आरबीआई डिप्टी गवर्नर बोले-2060 तक देश में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता**

इंडिया के डिप्टी गवर्नर माइकल पात्रा ने यह बात 9 जुलाई को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी में दिए भाषण में कही। उन्होंने कहा -अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के संकल्प को देखते हुए यह कल्पना करना संभव है कि भारत अगले दशक में आगे निकल जाएगा। पात्रा ने कहा कि ऐसा अनुमान लगाया गया है कि अगर भारत अगले 10 सालों में 9.6 फीसदी प्रति वर्ष की दर से

आर्थिक ग्रोथ करता है तो लोअर मिडिल क्लास इनकम के ट्रैप को तोड़कर बाहर आ सकता है और विकसित देश बन सकता है। इसका असर प्रति व्यक्ति आय में भी दिखना चाहिए। हालांकि, 2047 तक विकसित देश के लिए प्रति व्यक्ति आय की सीमा 34,000 अमेरिकी डॉलर (करीब 28 लाख) तक करने की जरूरत होगी। डिप्टी गवर्नर माइकल पात्रा कहा कि भारतीय रुपए को इंटरनेशनल बनाने के लिए भी मैक्रो इकोनॉमिक पॉलिसी और फाइनेंशियल स्टेबिलिटी पॉजिटिव ट्रैक में है। भारत में महंगाई दर को वैश्विक महंगाई दर के मुताबिक करने की जरूरत है, जिससे रुपए के आंतरिक और बाहरी वैल्यू को संरक्षित (प्रिजर्व) किया जा सके। इससे रुपए की इंटरनेशनलाइजेशन ग्राउड तैयार होगी और भारत आने वाले कल के लिए दुनिया के इकोनॉमिक पावरहाउस के रूप में उभर सकेगा। पात्र ने कहा कि मॉनेटरी पॉलिसी एक्शन और सप्लाई रिलेटेड उठाए गए कदम के कारण महंगाई दर 4 फीसदी के तय लक्ष्य के आसपास आई है। उन्होंने कहा कि रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 में महंगाई दर 4.5 फीसदी और वित्त वर्ष 2025-26 में 4.1 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है।

एनडीए को झटका देने की थी तैयारी, खुद का ही हो गया 'खेला'

- **महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी के 7 विधायकों ने की क्रॉस वोटिंग**

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधान परिषद की 11 सीटों के लिए शुक्रवार को हुए द्विवार्षिक चुनाव के नतीजे सामने आ चुके हैं। कुल 12 उम्मीदवार मैदान में थे। इनमें से सत्ताधारी महायुति के 9 उम्मीदवार थे, जबकि विपक्षी महाविकास अघाड़ी के तीन उम्मीदवार मैदान में थे। चुनाव परिणामों के मुताबिक महायुति के सभी 9 उम्मीदवारों की जीत हुई है, जबकि महाविकास अघाड़ी के दो उम्मीदवार विजयी रहे हैं। चुनाव परिणामों और मिले वोटों से पता चलता है कि मतदान के दौरान कांग्रेस के कम से कम सात विधायकों ने पार्टी के निर्देशों की अवहेलना की है।

बेल आज, रिहाई 6 महीने बाद, यह कैसा आदेश !

पटना हाईकोर्ट के ऑर्डर पर बिफरे सुप्रीम कोर्ट के जज, जताई हैरानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को पटना हाईकोर्ट के एक अजीबोगरीब आदेश पर चिंता जताई। हत्या के एक मामले में आरोपी को जमानत तो दे दी गई, लेकिन बिना कोई कारण बताए उसे छह महीने बाद रिहा करने का निर्देश दिया गया। जस्टिस अभय ओका और जस्टिस उज्ज्वल भयान की पीठ ने आरोपी जितेंद्र पासवान को हाईकोर्ट के आदेश की शर्तों के आधार पर अंतरिम जमानत दे दी है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा यह अजीब बात है कि हाईकोर्ट ने कहा है कि जमानत देने का आदेश 6 महीने बाद लागू होगा। 2 सितंबर को वापसी योग्य नोटिस जारी किया गया।

संक्षिप्त समाचार

क्षितिज सिंघल द्वारा मुरैना में विद्युत आपूर्ति एवं निर्माणाधीन कार्यों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने मुरैना वृत्त में विद्युत आपूर्ति और विद्युत वितरण व्यवस्था को लेकर मुरैना वृत्त के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे बिजली लाइनों और उपकेन्द्रों का प्रभावी ढंग से रखरखाव करें। उन्होंने 5 लाख से अधिक राशि के बकायादारों के प्रकरणों की समीक्षा की और बकाया राशि वसूली के लिए भू-राजस्व संहिता के तहत कार्यवाही के निर्देश दिये। प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल शुक्रवार को मुरैना जिले की विद्युत आपूर्ति और विद्युत वितरण व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। इस अवसर पर कंपनी के निदेशक (वाणिज्य) श्री सुधीर कुमार श्रीवास्तव, निदेशक (तकनीकी) श्री दीप्तापाल सिंह यादव, मुख्य महाप्रबंधक (ग्वालियर क्षेत्र) श्री राजीव गुप्ता एवं महाप्रबंधक मुरैना वृत्त श्री बी.एस. दांगी सहित सभी उपमहाप्रबंधक, प्रबंधक, सहायक प्रबंधक एवं मैदानी अधिकारी उपस्थित थे। प्रबंध संचालक ने समीक्षा बैठक के दौरान खराब परफॉर्मेंस को लेकर दो अधिकारियों पर कार्यवाही के निर्देश दिये साथ ही 5 बड़े विद्युत बकायादारों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये ताकि बकायादारों में एक व्यापक संदेश जा सके। उन्होंने बकाया राशि वसूली के लिए जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन से आवश्यक सहयोग लेने और जले तथा खराब मीटरों को समय-सीमा में बदलने की कार्यवाही के लिए कहा। इस दौरान प्रबंध संचालक ने रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्युशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस) के अंतर्गत 33/11 के. व्ही. बिंदवा कवारी उपकेन्द्र का निरीक्षण किया एवं आवश्यक निर्देश दिये।

भिण्ड में अमानक सफेद तारों की हुई जब्ती, दी चेतावनी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के अंतर्गत आने वाले सभी 16 जिलों में चोरी बहुल इलाकों में विद्युत का अनधिकृत एवं अवैध उपयोग करने वालों के खिलाफ बिजली कंपनी द्वारा सख्त कार्रवाई की जा रही है। कंपनी द्वारा बकाया राजस्व वसूली एवं अवैध विद्युत के उपयोग की रोकथाम के लिए इन दिनों विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत कंपनी द्वारा सीधे लाईन से बिजली चोरी तथा अवैध व अनधिकृत विद्युत का उपयोग करने वालों के खिलाफ विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 126, 135 एवं 138 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। भिण्ड शहर में लहार रोड सर्किट हाउस, लहार चुंगी, भरौली तिराहा एवं भरौली बायपास रोड पर सफेद तार एवं अवैध डोरियों को जब्त कर नष्ट करने की कार्यवाही की गई। यह कार्य विद्युत विभाग की टीम द्वारा विशेष पुलिस बल की सहायता से किया गया। इसके साथ ही लोगों को सूचित भी किया गया कि अमानक स्तर के सफेद तारों का उपयोग न करें, अन्यथा उनके विरूद्ध प्रकरण दर्ज किया जाएगा। कंपनी ने कहा है कि विद्युत चेकिंग की कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बिजली उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे नियमानुसार वैध कनेक्शन लेकर ही बिजली का उपयोग करें। अनधिकृत एवं अवैध तरीके से विद्युत का उपयोग न करें तथा अपने बकाया बिजली बिलों के साथ ही वर्तमान देयकों का समय पर भुगतान सुनिश्चित करें।

प्रदेश की उपलब्धियों और बजट की खूबियों से अवगत कराया जनता को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंत्रि-परिषद के सदस्यों ने प्रदेश सरकार के वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट की खूबियों से और प्रदेश की उपलब्धियों से अवगत कराने के लिये पत्रकारों से जानकारियाँ साझा की। मंत्रि-परिषद के सदस्यों ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में एक साथ पत्रकारों से संवाद किया। सरकार की उपलब्धियों और बजट की खूबियों से 24 जिला मुख्यालय पर मंत्रि-परिषद के सदस्यों ने, 10 जिला मुख्यालय पर सांसदों ने, 13 जिला मुख्यालयों पर विधायकों ने और शेष जिला मुख्यालयों पर अन्य वरिष्ठ जन-प्रतिनिधियों ने मीडिया प्रतिनिधियों से जानकारियाँ साझा की।

भोपाल लॉर्ड कृष्णा मंदिर खजूरी कला में रुक्मिणी विवाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के लॉर्ड कृष्णा मंदिर खजूरी कला में शुक्रवार को रुक्मिणी और भगवान श्रीकृष्णा का स्वयंवर आयोजित हुआ। स्वयंवर की लीला समाज के कलाकारों ने निभाई। इस मौके पर वेदों में वर्णित सर्व ऐश्वर्य पूजन किया गया। इसमें 50 से अधिक परिवार शामिल हुए। यह पूजा विभिन्न ग्रहों की सभी प्रकार की अशुभ स्थितियों को दूर करने के उद्देश्य से की जाती है। मंदिर समिति के प्रवक्ता निदिश नायर ने बताया कि यह आयोजन मंदिर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर किए जा रहे हैं।

टंकी रिसाव एवं किसी प्रकार की दुर्घटना पर वरिष्ठ अधिकारियों पर होगी कठोर कार्रवाई-मंत्री उइके

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके ने कहा कि टंकी में रिसाव या किसी भी प्रकार की दुर्घटना की स्थिति में वरिष्ठ अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर कठोर कार्रवाई की जाएगी। जल निगम द्वारा बनाई पानी की टंकियों पर राजनैतिक या व्यवसायिक विज्ञापनों की मनाही है, इस बात का खास ध्यान रखें। बारिश के चलते पानी की सफाई के लिये क्लोरीनेशन, नियमित परीक्षण का विशेष ध्यान रखा जाए। सभी वरिष्ठ अधिकारी मौका स्थल पर जाकर परियोजनाओं का नियमित परीक्षण करें एवं भ्रमण में जन-प्रतिनिधियों को भी साथ ले जायें। भ्रमण की फोटो एवं वीडियो पोर्टल पर अपलोड करें। जल निगम एवं पीएचई के अधिकारी आपसी समन्वय से वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में समय-सीमा में सभी परियोजनाओं को पूर्ण करें । आम नागरिको को स्वच्छ पेयजल आपूर्ति का कार्य प्राथमिकता से किया जाए। मंत्री श्रीमती उइके ने कहा कि समूह नल-जल योजनाओं की बैठकों में स्थानीय जन-प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित करें, उनके सुझाव लें जिससे उनके क्षेत्र की जनता की समस्याओं का निराकरण करते हुए योजनाओं के कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। समूह नल-जल योजनाओं का शुभारंभ स्थानीय जन-प्रतिनिधियों से कराया जाए। पानी की टंकी के निर्माण में गुणवत्तायुक्त सामग्री का उपयोग किया जाए। प्रदेश की 24 परियोजना के क्रियान्वयन इकाई के तहत समूह नल-जल योजनाओं की समीक्षा की। सचिव श्री पी. नरहरि ने कहा कि अधिकारी के व्यक्तिगत कारणों की वजह से परियोजना में लेट लतीफी बर्दाश्त नहीं की जायेगी। किसी भी परियोजना में गुणवत्ता से समझौता नहीं किया जाएगा।

सभी अधिकारी नियमित रूप से क्षेत्र का भ्रमण करें एवं स्वयं संतुष्ट होने के बाद ही संबंधित संस्थान को सुपुर्द करें। सभी कार्य पूर्ण पारदर्शिता के साथ किये जायें एवं कार्य प्रगति को रियल टाइम में पोर्टल पर अपलोड

स्व. श्रीमती पूजा थापक की स्मृति में जनसम्पर्क परिसर में रोपा हरसिंगार का पौधा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनसंपर्क विभाग की होनहार सहायक संचालक श्रीमती पूजा थापक की दो दिन पहले हुई असामयिक मृत्यु ने विभागीय अमले को झकझोर कर रख दिया है। स्व. श्रीमती पूजा थापक की स्मृति में संचालनालय परिसर में शुक्रवार को जनसम्पर्क संचालनालय के अधिकारी-कर्मचारियों ने एक पेड़ मां के नाम के तहत हरसिंगार का पौधा रोपित किया।

अपर संचालक श्री जी. एस. वाधवा ने कहा है कि विभाग के सभी अधिकारी-कर्मचारियों ने संकल्प लिया है कि हम सभी स्व. श्रीमती पूजा थापक की स्मृति में लगाए गए पौधे को वृक्ष बनने तक सहेजेंगे। पौध-रोपण के अवसर पर अपर संचालक श्री संजय जैन, संयुक्त संचालक श्री मुकेश मोदी और श्री घनश्याम सिरसाम, उप-संचालक श्री क्रांतिदीप अलूने, श्री अवनीश सोमकुंवर, श्री टी.के. चटर्जी, श्री संतोष मिश्रा, श्रीमती बिंदु सुनील, श्री अरुण शर्मा, सहायक संचालक श्री अंकुश मिश्रा, श्री राजेश पाण्डेय, सहायक जनसंपर्क अधिकारी श्री महेश दुबे, श्री अनिल वशिष्ठ सहित विभागीय कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री अरविंद सावनेर एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

अटल गृह ज्योति योजना में एक करोड़ एवं कृषि ज्योति योजना में 26 लाख से अधिक उपभोक्ताओं को मिल रहा लाभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि एक करोड़ से अधिक बिजली उपभोक्ताओं को अटल गृह ज्योति योजना और 26 लाख 59 हजार उपभोक्ताओं को अटल कृषि ज्योति योजना में लाभान्वित किया जा रहा है। अटल गृह ज्योति योजना में प्रदेश के ऐसे सभी घरेलू उपभोक्ताओं को योजना का लाभ दिया जा रहा है, जिनकी मासिक खपत 150 यूनिट तक है। ऐसे उपभोक्तओं को प्रथम 100 यूनिट की खपत के लिये अधिकतम 100 रूपये का बिल दिया जा रहा है एवं अंतर की राशि राज्य शासन द्वारा सब्सिडी के रूप में वितरण कंपनियों को दी जा रही है।

ऐसे उपभोक्तओं को 101 से 150 यूनिट खपत के लिए टैरिफ आदेश अनुसार दर लागू होती है। अटल गृह योजना में 100 वॉट तक के संयोजित भार के 30 यूनिट तक की मासिक खपत वाली उपभोक्ता श्रेणी एल.व्ही.-1,1 के अनुसूचित जाति/जनजाति के गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले उपभोक्ताओं को प्रति माह 25 रूपये का बिल दिया जा रहा है एवं अंतर की राशि राज्य शासन द्वारा सब्सिडी के रूप में दी जा रही है। अटल गृह ज्योति योजना से लगभग 1.08 करोड़ से अधिक घरेलू उपभोक्ता लाभान्वित हो रहे हैं। योजना के लिए वर्ष 2023-24 में सब्सिडी मद में 6404.61 करोड़ रूपये जारी किये गये हैं। अटल कृषि ज्योति योजना में 10 हार्स पॉवर तक के मीटर रहित स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 750 रूपये प्रति हार्स पॉवर प्रतिवर्ष एवं 10 हार्स पॉवर से अधिक के मीटर रहित स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 1500 रूपये प्रति हार्स पॉवर प्रतिवर्ष की फ्लेट दर से बिजली दी जा रही है। साथ ही 10 हार्स पॉवर तक के मीटरयुक्त स्थाई कृषि पंप कनेक्शन एवं अस्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को भी ऊर्जा प्रभार में रियायत दी गई है। निर्धारित दर से अंतर की राशि का भुगतान राज्य शासन द्वारा सब्सिडी के रूप में किया जा रहा है। इस योजना से लगभग 26.59 लाख कृषि उपभोक्ता लाभान्वित हो रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट की विशेष लोक अदालत में होगी मध्य प्रदेश के 218 लंबित प्रकरणों की सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के अलग-अलग विभागों के 218 प्रकरण सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं। अब इस प्रकरणों के निराकरण के लिए सुप्रीम कोर्ट विशेष लोक अदालत का आयोजन करने जा रहा है। 29 जुलाई से तीन अगस्त तक विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इसमें मध्य प्रदेश के 218 प्रकरणों की सुनवाई कर निराकरण के प्रयास किए जाएंगे। लोक अदालत में प्रकरणों की सुनवाई को लेकर सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने सभी विभागों से प्रकरणों की वस्तुस्थिति के साथ तैयारी कर कोर्ट में प्रस्तुत होने को कहा है। इसमें विभाग के उप सचिव को नोडल अधिकारी नामांकित किया गया है। इनमें सर्वाधिक भोपाल के 66, ग्वालियर 25, इंदौर के 34 प्रकरण सुप्रीम कोर्ट में लंबित है।

वन विभाग के तीन है। वहीं कुछ प्रकरणों में तो विभाग की जगह मध्य प्रदेश सरकार को पार्टी बनाया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) के प्रमुख सचिव मनीष रस्तोगी ने शुक्रवार मंत्रालय में सभी विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर सुप्रीम कोर्ट में लंबित प्रकरणों की वस्तुस्थिति की जानकारी ली। रस्तोगी ने कहा कि इनमें से अधिकांश प्रकरण वर्षों पुराने हैं। ऐसे में इनका निराकरण शीघ्रता से होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट में पूरी तैयारी के साथ सरकार का पक्ष रखें। इसके लिए जीएडी ने एक फार्मेट भी दिया है, जिसे भरकर विभागों को सुप्रीम कोर्ट के प्रकरण की जानकारी देनी होगी। चयनित प्रकरण के निराकरण के संबंध में इस फार्मेट में सबसे पहले प्रकरणों की संख्या, पक्षकार का नाम, प्रकरण का सार, ओआईसी का नाम और रिमार्क भरना होगा। यह जानकारी राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट को भेजेगी।

प्रदेश में वंचित वर्ग की बालिकाओं के लिये 732 छात्रावासों का हो रहा है संचालन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा सुविधा से वंचित रहने वाली बेघर, अनाथ, शाला से बाहर बालिकाओं के लिये अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराने के लिये 732 बालिका छात्रावास और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। इन छात्रावासों में करीब 76 हजार 450 बालिकाएं अध्ययनरत हैं। इन छात्रावासों का संचालन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान में 324 बालिका छात्रावास संचालित हो रहे हैं। इनमें करीब 23 हजार 100 बालिकाएं अध्ययनरत हैं। बालिका छात्रावास की गतिविधियों में बालिकाओं को वृतिका, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, स्पोटर्स फॉर डेवलपमेंट, लायब्रेरी एवं उपचारात्मक शिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय केन्द्र सरकार की मदद से संचालित किये जा रहे हैं, यह विद्यालय उन क्षेत्रों में संचालित किये जा रहे हैं, जहाँ महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है। इन छात्रावासों में 75 प्रतिशत बालिकाएं अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय की हैं।

शेष 25 प्रतिशत बालिका अल्पसंख्यक एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाली अनाथ, बेसहारा एवं एकल परिवार से ताल्लुक रखती हैं। चयनित बालिकाओं को कक्षा 8वीं तक की शिक्षा पूरी करने के लिये आवश्यक व्यवस्थाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। वर्तमान में संचालित 207 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में करीब 33 हजार 250 बालिकाएं लाभान्वित हो रही हैं। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत कक्षा 9वीं से 12वीं के लिये 201 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय संचालित हो रहे हैं।

बीएड में 11 हजार से अधिक सीटें खाली

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के 625 बीएड कालेजों में बीएड, एमएड और बीपीएड जैसे अन्य पाठ्यक्रमों में 59 हजार सीटों पर प्रवेश के लिए एक अतिरिक्त चरण की प्रक्रिया फिर शुरू की जा रही है। उच्च शिक्षा विभाग ने इसके लिए नए चरण की काउंसलिंग की समय-सारिणी घोषित कर दिया है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए विद्यार्थी 15 जुलाई तक पंजीयन और च्वाइस फिलिंग करवा सकेंगे।

ऐसे विद्यार्थी जो पहले पंजीयन करवा चुके हैं, वे च्वाइस फिलिंग दोबारा से कर सकेंगे। उन्हें पंजीयन दोबारा नहीं करवाना है। विद्यार्थियों को 15 जुलाई तक पंजीयन का मौका मिलेगा, जबकि 16 जुलाई तक विद्यार्थी आनलाइन दस्तावेज सत्यापन करवा सकेंगे। 19 को मेरिट सूची का प्रकाशन होगा और 25 जुलाई को सूची जारी होगी । बता दें, कि कालेजों में नए चरण की काउंसलिंग की मांग कर रहे थे। प्रदेश भर में बीएड में 11 हजार 445 सीट खाली हैं। राजधानी के 64 कालेजों में साढ़े पांच हजार में से 700 सीटें खाली हैं। कालेजों में मेरिट के आधार पर कालेजों में सीटें आवंटित होंगी । 30 जुलाई तक विद्यार्थियों को आवंटित हुए कालेजों में फीस जमा करनी होगी, जबकि 31 जुलाई तक नए एडमिशन वाले व पिछले तीनों चरण में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को हेल्प सेंटर पर भौतिक रूप से उपस्थित होकर मूल दस्तावेजों का पुनः सत्यापन करवाना होगा।

सीए फाइनल में बेहतर प्रदर्शन पर जान्हवी पालीवाल का सम्मान

भोपाल। चार्टर्ड अकाउंटेंट्स फाइनल परीक्षा में भोपाल की जान्हवी पालीवाल के बेहतर प्रदर्शन पर शुक्रवार को सर्व ब्राह्मण कल्याण उत्थान समिति ने उनका सम्मान किया। समिति सदस्यों ने उनके घर पहुंचकर शॉल, श्रीफल और बुके देकर स्वागत किया। साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि चार्टर्ड अकाउंटेंट्स फाइनल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के परिणाम गुरुवार, 11 जुलाई, 2024 को घोषित किए गए थे। इस मौके पर जान्हवी ने कहा कि स्वर्गीय पिता कमल पालीवाल के संस्कार, प्रेरणा तथा दादी शकुंतला पालीवाल एवं मां ज्योति पालीवाल के आशीर्वाद और परिवार के सहयोग से यह सफलता हासिल की है। सम्मान कार्यक्रम में अनिल बाजपेयी, श्याम सुंदर शर्मा, सरोजनी दुबे, सुरसरि पटेल, साधना दुबे, श्रद्धा दुबे, माधुरी गौड़, नीलिमा दुबे ने उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया।

भोपाल में बोगदा पुल के आस-पास 9 अगस्त तक बंद रहेंगे तीन रास्ते, ये है नया रूट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल मेट्रो रेल परियोजना में पुल बोगदा के पास मेट्रो स्टेशन बनाया जाना है। इसके लिए आम लोगों की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए पुल बोगदा पर आने वाले तीनों तरफ के रास्तों को बंद कर यहां से गुजरने वाले ट्रैफिक का मार्ग परिवर्तित किया गया है। इस बात की सूचना निर्माण कंपनी द्वारा यातायात पुलिस को दी गई है। सुरक्षित यातायात के दृष्टिकोण से निर्माण कार्य के दौरान 14 जुलाई रविवार से नौ अगस्त तक पुल बोगदा के आसपास के तीन मार्ग यातायात के लिए बंद रहेंगे।

प्रभात चौराहा से बोगदा पुल होकर भारत टाकीज अथवा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह की ओर आवागमन करने के लिए प्रभात चौराहा, परिहार चौराहा (अशोका गार्डन), 80 फीट रोड-स्टेशन बजरिया तिराहा-भारत टाकीज ओवर ब्रिज-संगम टाकीज तिराहा होकर भारत टाकीज एवं रेल्वे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह की ओर आवागमन कर सकेंगे। इसी प्रकार भारत टाकीज अथवा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह से प्रभात चौराहा की ओर आवागमन करने के लिए संगम टाकीज तिराहा-भारत टाकीज ओवर ब्रिज-स्टेशन बजरिया तिराहा-80 फीट रोड-परिहार चौराहा(अशोका गार्डन) से प्रभात चौराहा की ओर आवागमन कर सकेंगे। मैदा मिल रोड से जिंसी धर्म कांटा होकर भारत टाकीज की ओर आवागमन करने वाले वाहन मैदा मिल रोड, स्लाटर हाउस, जिंसी धर्म कांटा, जिंसी पुलिस चौकी, नीम वाली सड़क से शिव मंदिर, पुल पातरा से भारत टाकीज की ओर आवागमन कर सकेंगे। इसी प्रकार भारत टाकीज से मैदा मिल रोड की ओर आवागमन करने के लिए भारत टाकीज, पुल पातरा, शिव मंदिर, नीम वाली सड़क, जिंसी पुलिस चौकी, जिंसी धर्म कांटा, स्लाटर हाउस होकर मैदा मिल की ओर आवागमन कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस का भव्य उद्घाटन 14 को

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन द्वारा 55 उन्नयित प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस का उद्घाटन समारोह गृह मंत्री भारत सरकार के मुख्य अतिथ्य एवं मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश शासन की अध्यक्षता में होगा, जिसका सीधा प्रसारण इंदौर से 14 जुलाई 2024 को किया जाएगा। संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी परिस्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी में भी स्थानीय उद्घाटन समारोह का भव्य आयोजन होगा। महाविद्यालय में यह कार्यक्र म सांसद डॉ. राजेश मिश्रा लोकसभा क्षेत्र सीधी के मुख्य अतिथ्य तथा विधायक श्रीमती रीती पाठक विधानसभा क्षेत्र सीधी की अध्यक्षता में संपन्न होगा। इस भव्य समारोह में विधायक श्री विश्वामित्र पाठक विधानसभा क्षेत्र सिहावल एवं विधायक श्री कुंवर सिंह टेकाम विधानसभा क्षेत्र धौहनी, श्री देव कुमार सिंह चौहान के विशिष्ट आतिथ्य एवं गरिमामई उपस्थिति में संपन्न होगा। कार्यक्र म में संजय गांधी स्मृति शासकीय महाविद्यालय सीधी के जन भागीदारी अध्यक्ष एवं सीधी जिले के कलेक्टर श्री स्वरोचिष सोमवंशी के साथ पुलिस अधीक्षक डॉ. रवींद्र वर्मा, अपर कलेक्टर श्री राजेश शाही, एसडीएम श्री नीलेश शर्मा एवं अन्य प्रशासकीय अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। महाविद्यालय परिवार की ओर से सीधी जिले के वरिष्ठ एवं गणमान्य लोगों को भी आमंत्रित किया गया है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी. के. सिंह ने शहर के वरिष्ठ जनों एवं महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले सभी छात्र-छात्राओं से आग्रह किया है कि अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस के रूप में संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी परिस्नातकोत्तर महाविद्यालय के उन्नयित होने के ऐतिहासिक पल के भागीदार बने।

जिले में औसत वर्षा 199.5 मि.मी. दर्ज, सर्वाधिक वर्षा मझौली में

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 13 जुलाई को सीधी जिले में 36.9 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। तहसील रामपुर नैकिन में 1.0 मि.मी., चुरहट में 110.0 मि.मी., गोपद बनास में 36.0 मि.मी., सिहावल में 23.0 मि.मी., बहरी में 31.0 मि.मी., मझौली में 37.0 मि.मी. और कुसमी में 20.0 मि.मी. वर्षा हुई है।

उल्लेखनीय है कि जिले में अब तक 199.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज हुई है। 01 जून से 13 जुलाई तक तहसील मझौली में सर्वाधिक वर्षा 255.0 मि.मी. दर्ज की गई है। तहसील रामपुर नैकिन में 226.1, चुरहट में 221.8, गोपद बनास में 163.0, सिहावल में 165.8, बहरी में 162.8 और कुसमी में 202.0 मि.मी. औसत वर्षा हुई है जबकि गतवर्ष इसी अवधि में जिले में 188.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज हुई थी। गतवर्ष की तुलना में इस वर्ष 10.7 मि.मी. औसत वर्षा अधिक हुई है।

आरोपी पति एवं सास को दस वर्ष का कारावास एवं बीस हजार जुर्माना

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। रोहित सिंह चैहान ने थाना कोतवाली में रिपोर्ट की गई कि उसकी शादी वर्ष 2020 में आरती सिंह के साथ हुई थी। दिनांक 05.05.2021 को शाम करीबन समय 07.30 बजे वह बर्तन लेने अपने दूसरे घर गया था, जब बर्तन लेकर वापस आ रहा था तभी कुंआ के पास छटपटाहट की आवाज आने पर कुंआ में देखा तो उसकी पत्नी आरती सिंह फांसी लगाकर लटक रही थी और उसके पैर पानी के अंदर घुटना तब डूबे हुए थे जिससे उसकी मृत्यु हो गई। मामला दर्ज कर पुलिस द्वारा कार्यवाही प्रारंभ की गई, जिसमें पाया गया कि शादी के बाद से ही मृतिका का पति, सास, ससुर एवं दादी सास दहेज में भैंस, बकरी एवं जेवरात की मांग को लेकर मृतिका के साथ गाली गलौच मारपीट कर उसे प्रताड़ित करते थे। उक्त दहेज पाने के बावजूद भी मृतिका का पति रोहित सिंह, ससुर बीरेन्द्र सिंह, सास उर्मिला सिंह एवं दादी सास कुसुमकली सिंह लगातार दहेज की मांग को लेकर मृतिका को गाली गलौच व मारपीट कर प्रताड़ित करते रहे। उक्त प्रताड़ना से तंग आकर मृतिका ने दिनांक 05.05.2021 को ससुराल के कुंआ में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। प्रथम दृष्टया अपराध अंतर्गत धारा 498ए, 304-बी, 34 भा.दं.सं. एवं धारा 3/4 दहेज प्रतिषेध अधिनियम का घटित होना पाये जाने पर आरोपीगण के विरूद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट 611/2021 पंजीबद्ध कर प्रकरण विवेचना में लिया गया एवं विवेचना उपरांत अभियुक्तगण के विरूद्ध अभियोग पत्र माननीय जिला न्यायालय सीधी में प्रस्तुत किया गया, जिसके न्यायालयीन सत्र प्र. क्र. 135/21 में शासन की ओर से शसक्त् पैरवी करते हुए अपर लोक अभियोजक श्रद्धा सिंह द्वारा मामला संदेह से परे प्रमाणित कराया गया। परिणामस्वरूप माननीय प्रथम अपर सत्र न्यायिधीश की न्यायवयालय के तृतीय अतिरिक्ता सत्र न्यायाधीश, के द्वारा अभियुक्त पति रोहित सिंह चौहान तनय वीरेन्द्री सिंह चौहान उम्र 25 वर्ष एवं सास उर्मिला सिंह पति वीरेन्द्रन सिंह चौहान उम्र 48 वर्ष निवासी ग्राम जनकपुर थाना कोतवाली सीधी को धारा 304बी भादवि एवं धारा ङ्दहेज प्रतिषेध अधिनियम के अंतर्गत 10-10 वर्ष के कठोर कारावास एवं 20,000/- 20,000/- रू. अर्थदण्ड की सजा से दंडित किया गया।

भाजपा की जिला कार्यसमिति की बैठक

कार्यकर्ता ही भाजपा की रीढ़ हैं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय जनता पार्टी जिला रीवा की कार्यसमिति बैठक भाजपा कार्यालय अटल कुंज के स्व. चन्द्रमणि त्रिपाठी सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के प्रदेश के पशुपालन एवं डेयरी विभाग के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार लखन पटेल उपस्थित रहे। अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. अजय सिंह ने की।

बैठक में मंत्री पटेल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की कार्यकर्ता ही रीढ़ हैं, उनका सम्मान किया जाना चाहिए। भाजपा ने कार्यकर्ताओं की बदौलत प्रदेश तथा देश के अन्दर राष्ट्रवादी विचारधारा की सरकार बनाई। कहा कि जिला कार्यसमिति बैठक आगामी कार्यक्रमों के दृष्टिकोण से मील का पत्थर साबित होगी। बताया कि मप्र सरकार द्वारा सर्वहारा वर्ग के लिए कार्य किया जा रहा है। इस दौरान उन्होंने मडिया को अलग से संबोधित किया और सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। बैठक में प्रमुख रूप से जिला प्रभारी शशांक श्रीवास्तव, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य वीरेन्द्र गुप्ता, राजेन्द्र पाण्डेय, विधायक द्वय सिद्धार्थ तिवारी, नरेन्द्र प्रजापति, जिला महामंत्री ममता गुप्ता, अशोक सिंह गहरवार, सह मीडिया प्रभारी विवेक पाण्डेय छोटू, वरिष्ठ नेता डॉ. रामसखा वर्मा आदि उपस्थित रहें। बैठक में जिलाध्यक्ष अजय सिंह ने पार्टी के द्वारा 10 जुलाई से 4 अगस्त तक आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। बताया कि आगामी 13 से 15 जुलाई को मंडल कार्यसमिति की मंडल बैठकें, 15 से 20 जुलाई तक जिले के सभी 233 शक्ति केन्द्रों की बैठके तथा 21 जुलाई को गुरू पूर्णिमा के अवसर अपने अपने क्षेत्र के मठ मंदिर आश्रम में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। वहीं 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस के अवसर पर सैनिकों का सम्मान तथा उनकी प्रतिमा स्थलों पर माल्यार्पण का कार्यक्र म, 28 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्र म को जिले के सभी 1496 बूथों में सुना तथा देखा जाएगा। इसके साथ ही 23 जून से 4 अगस्त तक एक पेड़ मां के नाम पौधरोपण होगा।

इंस्पायर अवार्ड मानक योजना आईडिया अपलोड का पोर्टल प्रारम्भ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की इंस्पायर अवार्ड मानक योजनान्तर्गत विद्यार्थियों के ऐसे मौलिक विचार जो समाज की समस्याओं का समाधान कर सकें और इसके अलावा घरेलू और मजदूरों के श्रम को कम करने के उपाय तथा उनकी कार्य क्षमता को बढ़ाने के साथ-साथ सेवाओं को भी आसान करने की अभिनव राह तैयार कर सकें। विद्यार्थियों के मौलिक विचारों को भारत सरकार विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा ऑनलाईन आमंत्रित किया जाता है। भारत सरकार द्वारा विद्यालयों के कक्षा 6 वीं से 10 वीं तक के स्कूली बच्चों के नवाचारी मौलिक विचार को ऑनलाइन प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है।

कौन पात्र होंगे: एपीसी रमसा डॉ. सुजीत कुमार मिश्र ने जानकारी देकर बताया कि इस योजना में शासकीय, अनुदान प्राप्त, अशासकीय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय एवं सीबीएसई, आईसीएसई से मान्यता प्राप्त जिले में संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत 10 से 15 वर्ष की आयु वर्ग और कक्षा 6वीं से 10वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आइडिया को शामिल किया जाना है। वर्ष 2024-25 के लिए समस्त विद्यालयों के नामांकन एवं प्रति विद्यालय पांच विद्यार्थियों अर्थात कक्षा 6, 7, 8, 9 और 10वीं के एक-एक विद्यार्थी कुल एक स्कूल से 05 विद्यार्थी के आइडिया ऑनलाइन अपलोड किए जाएंगे।

चयनित आईडिया को मिलेंगे दस हजार रूपये अवार्ड राशि: आइडिया की नवीनता, वर्तमान परिस्थितियों के समाधान में उपयोगिता, सामजिक व्यवहारिकता में उपयोगिता, वर्तमान सरकार की योजनाओ में प्रासांगिकता, प्रसार का दायरा एवं लागत की प्रभावशीलता को ध्यान में रखतें हुए विद्यार्थियो के मौलिक विचार अपलोड किये जायेगे। चयनित सभी विद्यार्थियों को अवार्ड की राशि रूपये 10 हजार सीधे उनके खातों में भेजी जायेगी। जिला शिक्षा अधिकारी सीधी डॉ. प्रेमलाल मिश्रा ने जिले के समस्त प्राचार्य एवं प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय से अच्छे आईडिया अपलोड करने हेतु पत्र जारी किया है।

बीड़ी श्रमिकों के छात्रों को छात्रवृत्ति का प्रावधान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बीड़ी संगठन रीवा के कोषाध्यक्ष मोहम्मद जलील ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति मे बताया कि शासन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए शिक्षा हेतु वित्तीय सहायता योजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश राज्य के बीड़ी चूना पत्थर एवं डोलोमाईट व लौह-मैग्नीज - क्रोम अयस्क खदान श्रमिकों के मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में अध्यनरत पुत्र-पुत्रियों को वित्तीय सहायता योजना के तहत कक्षा-1 से उच्च शिक्षा ग्रहण करने पर छात्रवृत्ति की राशि रुपये 1000 से अधिकतम 25000 रु तक स्वीकृत का प्रावधान किया गया है। प्रेस विज्ञप्ति में मोहम्मद जलील ने बताया कि योजनांर्तगत का लाभ प्राप्त करने के लिये पात्र छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति हेतु नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करने की प्रक्रिया प्रारंभ है, जिसकी अंतिम तिथि प्री-मेट्रिक हेतु 31 अगस्त 2024 एंव पोस्ट मेट्रिक हेतु 31 अक्टूबर निश्चित की गई है। सभी श्रमिकों से यह अपील की गई है कि वे अपने परिवार के छात्र-छात्राओं को शासन की उक्त योजना का लाभ दिलाने हेतु तत्काल छात्रवृत्ति योजना के तहत आवेदन ऑनलाइन कराने का कष्ट करें जिससे गरीब मजदूरों को शैक्षणिक विकास हेतु शासन द्वारा द्वारा प्रदत्त होने वाली आर्थिक सहायता का लाभ प्राप्त हो सके। आवेदन करने के पश्चात अपने शिक्षण संस्थान में संपर्क कर अपने आवेदन को स्कॉलरशिप पोर्टल-स्कॉलरशिप डॉट जीओवी डॉट इन के माध्यम से ही सत्यापित करवाना सुनिश्चित करें।

बाबा होतूराम की गुरु भक्ति और निष्काम सेवा भाव अनुकरणीय

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अखिल भारतीय सिंधु सन्त समाज ट्रस्ट के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी हंसदास और स्वामी सरूपदास ने कहा पूज्य गुरुदेव स्वामी होतूराम साहिब के वर्सी महोत्सव पर कहा कि बाबा होतूराम की गुरु भक्ति एवं निष्काम सेवा भाव अत्यंत अनुकरणीय है। बताया कि बाल्यावस्था से ही आश्रम में सदगुरु स्वामी मूलाराम साहिब की सेवा के अलावा उनकी कोई विशेष दिनचर्या नहीं थी। अपनी शारीरिक जरूरतों के ऊपर भी उनका ध्यान नहीं जाता था। बस दिन रात गुरु भक्ति एवं सेवा की लगन लगी रहती।

बताया गयाकि आश्रम के गद्दी आसीन होने के पश्चात भी उन्होंने सेवा नहीं छोड़ी। बृह्ममुहूर्त में उठ जाते और स्वयं अपने हाथों से पूरे आश्रम में झाड़ू और पोंछा लगाते। जीवन पर्यन्त उनका यह नियम चलता रहा।वृद्धा अवस्था में शरीर कमजोर हो जाने पर भी गुरुदेव बैठकर घिसटते-घिसटते सेवा पूरी करते और प्रार्थना करते रहते कि सबकुछ तुम्हारे हांथ में है भगवन। जीवन के अंतिम दिनों में स्वास्थ्य बिगड़ने पर वे अचेतावस्था में शैय्या पर सोते रहते। कोई मिलने आता तो उसे पहचानने से इंकार कर देते थे। सारा.सारा दिन नेत्र नहीं खोलते थे। बताया कि जिस दिन गुरुदेव को इस नश्वर देह का त्याग करना था उस दिन सेवा करने तक अपने प्राणों को रोके रखा। इस दौरान मात्रा वाणी का पाठ, आरती और प्रार्थना की गई। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्र म का समापन हुआ। कार्यक्रम में सिंधी सेंट्रल पंचायत के वरिष्ठ पदाधिकारियों के अलावा नगर के गणमान्य नागरिक और महिलाएं और युवा वर्ग सम्मीलित रहा।

इंजीनियरिंग महाविद्यालय के हीरक जयंती द्वार का हुआ भूमि भूजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। इंजीनियरिंग महाविद्यालय रीवा के हीरक जयंती द्वार का भूमि पूजन उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला द्वारा कालेज के प्राचार्य, प्रोफेसर, विद्यार्थी एवं पूर्व छात्रों की उपस्थिति में किया गया। ज्ञात हो कि रीवा इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किये जायेंगे। इस दौरान उन्होंने कहा कि हर 15 दिन में एलमुनी संगठन अपनी बैठक करें और आगे की रणनीति पर चर्चा करें। इसके साथ ही उपमुख्यमंत्री ने कहा कि हीरक जयंती द्वार के बन जाने से कॉलेज की खूबसूरती में चार चांद लग जाएंगे, द्वार के साथ ही रोड से कॉलेज तक पहुंचने वाली सड़क को भी चौड़ा किया जाएगा। इस दौरान एल्यूमिनी एसोसिएशन के सदस्यों द्वारा समारोह में विभिन्न तकनीकी खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। समारोह के दौरान छात्रों के स्किल डेवलपमेंट हेतु रूपरेखा तैयार की गई जिसे टेकफेस्ट एवं तकनीकी संगोष्ठी, कार्यशाला के माध्यम से करने का निर्णय लिया गया।

भूमिपूजन पंडित पूरन प्रसाद शुक्ला के अलावा मनगवां विधायक नरेंद्र प्रजापति, एयर कमोडोर राजीव मित्तल, शेर बहादुर सिंह परिहार, राजेश सिंह, सत्यनारायण दुबे, एसपी तिवारी, पीयूष तिवारी, रविशंकर पांडेय, डॉ. आरपी तिवारी, डॉ. डीके सिंह आदि उपस्थित रहे।

हजरत दाराशाह अखारे की तैयारी जोरो पर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मोहर्रम के मौके पर जुलूस व अखाड़े का प्रोग्राम किया जाता है। हजरत दाराशाह अखाड़ा बिछिया द्वारा नन्हे मुन्हे बच्चो को अखाड़े की तैयारी कराई जा रही है जिसमें लाठी डन्डा, तलवार, बरछी, ढाल, पटा को सही तरीके से इस्तेमाल करते हुये अपनी सुरक्षा करना सिखाया जाता है। अखारे की पूरी तैयारी मुख्य रूप से अखाड़े के उस्ताद अप्पू खान, फजलू खान की निगरानी में की जा रही है। अखाड़े में खेलने वाले बच्चो में मुख्य रूप से गुड्डू खान, वैस खान, लबीब खान, नूर अहमद, सुहैल खान, अकीउल्ला खान, राहुल, फजल खान, आदिल खान आदी बच्चो को तैयारी कराई जा रही है।

छात्रवृत्ति के लिए आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बीड़ी संगठन रीवा के कोषाध्यक्ष मोहम्मद जलील ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति मे बताया कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए शिक्षा हेतु वित्तीय सहायता योजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश राज्य के बीड़ी चूना पत्थर एवं डोलोमाईट व लौह-मैग्नीज - क्रोम अयस्क खदान श्रमिकों के मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में अध्यनरत पुत्र-पुत्रियों को वित्तीय सहायता योजना के तहत कक्षा-1 से उच्च शिक्षा ग्रहण करने पर छात्रवृत्ति की राशि रुपये 1000 से अधिकतम 25000 रु तक स्वीकृत की जाती है। योजनांर्तगत लाभ प्राप्त करने हेतु पात्र छात्र-छात्राओं के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करने की प्रक्रिया 30 जून 2024 से प्रारंभ हो चुकी है जिसकी अंतिम तिथि प्री-मेट्रिक हेतु 31 अगस्त 2024 एंव पोस्ट मेट्रिक हेतु 31 अक्टूबर निश्चित की गई है। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करने के लिए ओटीआर यानि वन टाइम रजिस्ट्रेशन व फेस ओथेंटिकेशन प्रक्रिया पूरी करना अनिवार्य है आवेदन की पात्रता व संबधित अन्य जानकारी एंव शर्तें नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर उपलब्ध है। आवेदन करने के पश्चात अपने शिक्षण संस्थान में संपर्क कर अपने आवेदन को स्कॉलरशिप पोर्टल- स्कॉलरशिप डॉट जीओवी डॉट इन के माध्यम से ही सत्यापित करवाना सुनिश्चित करें।

श्रवण कुमार बौद्ध इंटरनेशनल आईकान अवार्ड से सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नेहरू नगर रीवा निवास श्रवण कुमार बौद्ध शांतिप्रिय को समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इंटरनेशनल आईकान अवार्ड से सम्मानित किया गया है। श्रवण कुमार शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय दादर कुर्मियान में अध्यापन का कार्य करते हैं और उन्होंने अपनी सारी छुट्टियों को समाज कार्य के लिए समर्पित कर दिया है।

सामाजिक संगठन बामसेफद्वारा 2018 से डोर टू डोर भारतीय संविधान, सम्मान, सुरक्षा और संवर्धन का राष्ट्रव्यापी महा जनजागरण अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान अंतर्गत श्रवण कुमार बौद्ध गांव-गांव जाकर संविधान की पाठशाला नाम से संवैधानिक जागरूकता का कार्य कर रहे हैं। इसी दुरूह कार्य को बड़ी सहजता से करने के कारण आपको उक्त अवार्ड से सम्मानित किया गया है। ज्ञात हो कि श्रवण कुमार बौद्ध सामाजिक संगठन बामसेफ के कर्मठ कार्यकर्ता हैं और समाजिक उत्थान के कार्यों में लगातार सक्रिय रहते हैं।

कृषि वैज्ञानिकों एवं छात्रों ने रोपे पौधे, लिया संरक्षण का संकल्प

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कृषि महाविद्यालय रीवा में एक पेड़ मां के नाम पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. एसके त्रिपाठी एवं कृषि वैज्ञानिकों सहित कर्मचारियों एवं यूजी, पीजी के छात्र-छात्राओं पौधरोपण किया। साथ ही उनके सरंक्षण का संकल्प भी लिया है। इस दौरान अधीष्ठाता ने पीपल का पौधा लगाकर कार्यक्रम की शुरुआत किया। इस अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर, कृषि कॉलोनी में स्थित शिव मंदिर के प्रांगण सहित जगहों पर 590 पौधों को रोपण किया गया है। इस मौके पर अधीष्ठाता प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि पेड़-पौधों से ही पर्यावरण बचेगा। इसलिए सभी अपने घरों और आसपास में पौधे जरूर लगाएं। इस दौरान सरोजनी कन्या छात्रावास, बालक छात्रावास, दुग्ध पशुपालन विभाग, यूको बैंक के सामने, कॉलेज परिसर, कॉलेज प्रक्षेत्र, कृषि विज्ञान केन्द्र में पौधे रोपे गए। पौधरापेण में कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी, डॉ. एसएम कुर्मवंशी, डॉ. राजेश सिंह, एके पटेल, डॉ. केसी सिंह, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. सीजे सिंह, डॉ. बीके तिवारी, डॉ. टीके सिंह, डॉ. मनीषा द्विवेदी, डॉ. प्रदीप मिश्रा, डॉ. राधा सिंह, डॉ. स्मिता सिंह सहित अन्य प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राएं शामिल हुए।

विचार

नेपाल की प्रचंड राजनीति में सत्ता परिवर्तन

नेपाल में नए गठबंधन का लक्ष्य देश के राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार देना और लंबे समय से चली आ रही अस्थिरता को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण संवैधानिक सुधार पेश करना है। शुक्रवार को, प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने विश्वास मत खो दिया क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री के.पी. ओली की यू.एम.एल. ने वामपंथी गठबंधन से समर्थन वापस ले लिया था। इसके साथ ही प्रचंड की सरकार गिर गई और उन्होंने पी.एम. पद से इस्तीफा दे दिया। पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा की नेपाली कांग्रेस (एन.सी.) और ओली की यू.एम.एल. (सबसे बड़ी और दूसरी सबसे बड़ी पार्टियां) के बीच पिछले सोमवार को आधी रात को 7-सूत्रीय समझौता हुआ, जो दिसंबर 2022 के बाद से चौथी सरकार बनाएगा, जो तीसरी सबसे बड़ी पार्टी सी.पी.एन. माओवादियों की किंग-मेकर भूमिका को समाप्त करेगी। एक एन.सी. नेता ने मुझे बताया कि सौदे से एक दिन पहले भूटानी शरणार्थी घोटाले से जुड़े बेचैन झा की गिरफ्तारी, जिसके निशान एन.सी. और यू.एम.एल. के शीर्ष नेताओं तक पहुंचते हैं, ने इस सौदे को गति दी। गृह मंत्री रबी लामिछाने, जिन्हें एन.सी. ने पोखरा सहकारी धोखाधड़ी मामले में संसद में निशाना बनाया था और यू.एम.एल. ने उनका बचाव किया था, ने इस सौदे को भ्रष्टाचार के मामलों से बचने के लिए ओली और देउबा की कोशिश कहा। काठमांडू के मेयर बालन शाह ने गिरिबंधु चाय बागान भ्रष्टाचार मामले के बारे में व्यंग्यात्मक टिप्पणी की। 7-सूत्री सौदा अनिवार्य रूप से संसद के शेष 40 महीनों के दौरान सत्ता-सांझाकरण के बारे में है, जिसमें देउबा ने ओली को पहला प्रधानमंत्री देने की पेशकश की है क्योंकि वह 2027 के चुनावों से पहले प्रधानमंत्री बनना चाहते हैं। वे यू.एम.एल. के साथ सांझा किए जाने वाले मंत्रालयों की संख्या पर सहमत हो गए हैं, जबकि एन.सी. को वित्त और गृह मंत्रालय दिया जाएगा। एन.सी. और यू.एम.एल. अलग-अलग विचारधाराओं वाले कट्टर दुश्मन हैं। उनके दोनों नेताओं को व्यापक अनुभव है और वे जेल में भी रहे हैं। देउबा 5 बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं, जबकि ओली 2 बार नेपाल का नेतृत्व कर चुके हैं। देउबा को भारत का चहेता माना जाता है और पश्चिम उन्हें पसंद करता है, जबकि ओली चीन के पसंदीदा हैं, हालांकि वे कट्टर कम्युनिस्ट नहीं हैं, बल्कि दिल से लोकतांत्रिक हैं। 2008 में अंतरिम संविधान के तहत पहले बहुदलीय चुनावों के बाद से नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है। 2015 के संघीय, लोकतांत्रिक गणतंत्र संविधान के बाद भी 16 वर्षों में 16 प्रधानमंत्रियों ने कुर्सी का खेल खेला है। चुनावी प्रणाली एक त्रिशंकु संसद बनाती है। इस बीमारी को दूर करना राष्ट्रीय सर्वसम्मति सरकार का उद्देश्य है, जिसके लिए 275 सदस्यों वाले सदन में 184 सीटों के 2 तिहाई बहुमत से संविधान में बदलाव करना है। 10 साल तक चले जनयुद्ध का नेतृत्व करने वाले और परिवर्तनकारी संवैधानिक सुधारों को पेश करने में मदद करने वाले प्रचंड कोई नौसिखिए नहीं हैं। उन्हें सत्ता से प्यार है। अपनी पार्टी के घटते चुनावी आधार के बावजूद, वे सुर्खियों में बने रहने में कामयाब रहे हैं।

रूस और ऑस्ट्रिया की यात्राओं से भारत की नई उड़ान

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा के निष्कर्षों के साथ-साथ इसके वैश्विक निहितार्थ भी तलाशे जा रहे हैं। इन दोनों देशों की राजकीय यात्रा अनेक दृष्टियों से नई उम्मीदों को पंख लगाने के साथ भारत को शक्तिशाली बनाने वाली होगी। दोनों देशों की यात्रा के दौरान हुए विभिन्न समझौते भारत की तकनीकी एवं सामरिक जरूरतों को पूरा करने में अहम कदम साबित होंगे। सैन्य उत्पाद, व्यापार व उद्योग के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रूस और ऑस्ट्रिया के साथ द्विपक्षीय सहयोग ने नई उम्मीदें जगाई हैं। इन यात्राओं के दौरान प्रधानमंत्री ने जो प्रयास किए वे मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भरता के प्रयास, नये भारत-सशक्त भारत एवं सतत विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे।

निश्चित ही प्रधानमंत्री मोदी के प्रति इन दोनों देशों में जो सम्मानभावना देखने को मिली, उससे यही कहा जा सकता है कि मोदी विश्व-नेता के रूप में स्वतंत्र पहचान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं, जो भारत के लिये शुभ है। निश्चित तौर पर वैश्विक राजनीति में अपनी चमक के साथ आगे बढ़ते भारत के लिये रूस की यात्रा कई मायनों में बहुत उपयोगी एवं दूरगामी रही। इस यात्रा के दौरान भारत और रूस के बीच हुई 22वीं द्विपक्षीय बैठक में हुए नए समझौते काफी अहम हैं। रूस के युद्ध में फंसे होने के कारण रक्षा जरूरतों से संबंधित आपूर्ति में बाधा होना हमारे लिए चिंता की बात थी लेकिन मेक इन इंडिया के तहत भारत में ही रक्षा उपकरणों के स्पेयर पार्ट्स का प्लांट लगाने पर सहमति जताकर पुतिन ने बड़ी चिंता का समाधान कर दिया है। दोनों देशों के बीच का व्यापार 2030 तक 65 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर तक करने पर भी सहमति बनी है। यह भारत-रूस के विशेष रिश्ते को और मजबूत करने वाले होंगे। भारत-रूस की दोस्ती की गर्माहट से चीन एवं पाकिस्तान की बौखलाहट भी देखने को मिली है। यूक्रेन और गाजा में युद्धों की पृष्ठभूमि के बीच प्रधानमंत्री मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा पर दुनिया की नजरे लगी रही। एक ध्रुवरीय विश्व व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश कर रहे अमरीका और बहुध्रुवरीय विश्व व्यवस्था में अपना हित देख रहे रूस के बीच भारत की स्थिति एवं उसकी बढ़ती ताकत का भी विश्लेषण किया जा रहा है। मास्को में प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के गले मिलने पर यूक्रेन की नाराजगी के बावजूद अमरीका की सधी प्रतिक्रिया सामने आयी कि इससे उसके भारत से रिश्तों पर कोई असर नहीं होगा। निश्चित ही इससे यह साफ हो जाता है कि दुनिया अब एक या दो ध्रुवरीय नहीं रही। अमेरीका यह जान रहा है कि चीन के तानाशाही भरे रवैये से निपटने के लिए भारत का साथ आवश्यक है। वास्तव में इस आवश्यकता ने भी अमेरीका में भारत की अहमियत बढ़ाने का काम किया है। यह अहमियत यही बता रही है कि अब भारत का समय आ गया है। वास्तव में आज अमेरीका ही नहीं, विश्व का हर प्रमुख देश भारत को अपने साथ रखना आवश्यक समझ रहा है। कहना न होगा कि वैश्विक मंच पर योग का विषय हो, या अहिंसा का या फिर आतंकवाद से निपटने का, जलवायु परिवर्तन का मसला हो या फिर जी-20 देशों की अध्यक्षता की बात, भारत, दुनिया को नई दिशा दे रहा है, नई उम्मीदें जगा रहा है। एक नई ताकत एवं सशक्त अर्थ-व्यवस्था के साथ एक नया ध्रुव बनकर उभर रहा भारत समूची दुनिया की नजरों का ताज बना हुआ है। भारत अब बिना किसी दबाव के किसी भी अन्य ताकतवर देश की नाराजगी मोल लेने का हौसला रखता है। शीतयुद्ध के दौर में दो ध्रुवरीय विश्व व्यवस्था के बाद एक धुवीय व्यवस्था का अनुभव दुनिया को मिल चुका है। अब बहुध्रुवरीय विश्व व्यवस्था में ही संभावनाएं देखी जा रही हैं। ग्लोबल साउथ की आवाज बन भारत वैश्विक भूमिका को खुलकर प्रदर्शित भी कर रहा है। वैसे भी भारत एक बड़े देश के पाले में कभी नहीं रहा। अनेक संकटों से घिरा होकर भी भारत अपनी बात बुलन्दी के साथ दुनिया के सामने रखता रहा है, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के तीनों कार्यकाल में भारत ने अपने शक्तिशाली होने का भान कराया है। भारत की रूस से दोस्ती तो बहुत पुरानी है, लेकिन अमेरिका, ऑस्ट्रिया या अन्य नए देशों से दोस्ती का यह मतलब नहीं है कि अपने पुराने साथियों से दूर हो जाएं। इजरायल और फिलिस्तीन के मामले में भी यह देखा जा सकता है। इजरायल से नई दोस्ती के बावजूद फिलिस्तीन पर हमारी रणनीति नहीं बदली है। उसी तरह रूस से अच्छे संबंध का यह मतलब नहीं कि यूक्रेन के मामले में उसे क्लीन चिट दे दें। यही वजह है कि राष्ट्रपति पुतिन को मोदी ने शांति का पाठ पढ़ाने में कोई हिचक नहीं दिखाई। भारत की इस भूमिका के बीच अब अमरीका भी यह कहने में संकोच नहीं कर रहा है कि भारत को यूक्रेन युद्ध रोकने की पहल करनी चाहिए। फिलहाल शांति के पक्षधर अन्य देश भारत के साथ मिलकर रास्ता खोजने की पहल कर रहे हैं। ऑस्ट्रिया का रूस और यूक्रेन के बीच संभावित समझौता वार्ता का मंच बनने की इच्छा जाहिर करना यही बताता है। भारत अहिंसा एवं शांति का हिमायती का देश है और मानता है कि युद्ध से किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता। युद्ध केवल बर्बादी और तबाही लेकर ही आता है। रूस व यूक्रेन के बीच जो सीमा विवाद है वह इन देशों के बीच का मामला है और भारत शुरू से ही कहता रहा है कि इस समस्या का हल केवल बातचीत से ही होना चाहिए। नरेंद्र मोदी ने रूस की यात्रा के दौरान भी भारत का यही रुख सामने रखा और स्पष्ट किया कि किसी भी झगड़े को निपटाने का रास्ता केवल वार्तालाप ही हो सकता है। नरेंद्र मोदी ने रूस से आस्ट्रिया पहुंच कर भी इस रुख को और खोला और कहा कि भोले-भाले लोगों की हत्या कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकती। इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध के सन्दर्भ में इस तथ्य को अमेरिका को ही सबसे पहले समझना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा से क्या चीन की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं पर असर पड़ेगा? क्योंकि रूस एवं चीन के बीच बढ़ती मित्रता एवं प्रगाढ़ता समूची दुनिया के लिये एक चिन्ता का सबब है। भले ही अमरीका की ताकत को देखते हुए रूस ने चीन से निकटता बनाई हो, लेकिन भारत से उसकी दोस्ती इन सबसे ऊपर है। फिर भी चीन एवं पाकिस्तान भारत के दुश्मन ही रहे हैं। इन हालातों के बीच मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया यात्रा भारत के भाग्य के लिए नये सूर्य का उदय कही जा सकती है। प्रधानमंत्री मोदी की जितनी महत्वपूर्ण यात्रा रूस की रही, उतनी ही महत्वपूर्ण ऑस्ट्रिया की यात्रा भी रही। मोदी ने पाकिस्तान के साथ चीन को भी निशाने पर लेते हुए पुतिन से कहा कि चीन जहां पाकिस्तान के आतंकवाद को सहयोग-समर्थन और संरक्षण देने से बाज नहीं आ रहा है, वहीं चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते एशिया ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा बन गया है। अब मोदी की इन बातों का पुतिन पर क्या असर होगा, यह भविष्य के गर्भ में है। जहां तक रूस से मित्रता का सवाल है तो यह भारत का परखा हुआ सच्चा मित्र है और भारत यह दोस्ती कभी नहीं छोड़ सकता। पिछले दो दशकों में हमारे सम्बन्ध अमेरिका से भी मधुर हुए हैं परन्तु हमारी विदेश नीति पूरी तरह स्वतन्त्र है और दुनिया का कोई भी देश इसे प्रभावित नहीं कर सकता। भारत के द्विपक्षीय सम्बन्ध किस देश के साथ कैसे हैं यह केवल भारत ही तय करेगा। अमेरिका हमें रूस-यूक्रेन के बारे में क्या समझायेगा? भारत पर दुनिया का बढ़ता भरोसा इस बात का परिचायक है कि भारत विश्व की एक महाबड़ी शक्ति बनने की राह पर अग्रसर है और भारत शांति एवं अयुद्ध का हिमायती है। हम तो पहले ही यह कह चुके हैं कि भारत बुद्ध-महावीर-गांधी का देश है और इसकी विदेश नीति भी इनसे प्रेरणा लेकर ही तय होती रही है। बदलते वैश्विक सन्दर्भों के बावजूद भारत आपसी शान्ति, अहिंसा, युद्धमुक्त विश्व-संरचना व सह अस्तित्व पर ही विश्वास रखता है। दुनिया की महाशक्तियों द्वारा भारत को तवज्जो देने के पीछे जिन वजहों को देखा जा रहा है, उनमें व्यापारिक प्रगति के साथ शांति एवं अमन-चैन की दुनिया बनाना भी मुख्य है। निश्चित ही मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया यात्रा भारत के लिये 'सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना' एवं 'परिवर्तनकारी क्षण' साबित होगा।

ईरानी महिलाओं का भारतीय मुस्लिम महिलाओं को संदेश

प्रवीण गुगनानी

ईरान में इन दिनों चाँद चौदहवीं की ओर बढ़ रहा है और साफ़ साफ़ भी दिख रहा है। अन्य दिनों-महीनों की अपेक्षा ईरान में कुछ अधिक ही ख़ुशगवार मौसम छाया हुआ है। ईरान के निर्वाचन में सुधारवादियों की विजय एक बड़ी ऐतिहासिक घटना सिद्ध हो सकती है। विशेषतः मुस्लिम महिला जगत के लिए ईरान के चुनावों में मसूद पेज़ेश्कियान की विजय कुछ नये मार्ग खोलते हुए दिखाई पड़ती है। पेज़ेश्कियान सुधारवादी नेता हैं व हिजाब के ऊपर लगे हुए सख़्त क़ानून के भी बड़े विरोधी हैं। इन मायनों में ईरानी महिलाओं को पेज़ेश्कियान से बहुत बड़ी आशाएँ हैं। माना जाता है कि मुस्लिम स्त्री वर्ग ने हिजाब विरोधी दृष्टिकोण व कट्टरता विरोधी छवि व ऐसे ही चुनावी वादों के कारण पेज़ेश्कियान को बड़ी एकतरफ़ा मतदान किया है। भारत में हिजाब को लेकर एक बड़ा झंझावात चल रहा है। भारतीय मुस्लिम पुरुष समुदाय जहां हिजाब के पक्ष में खड़ा है वहीं मुस्लिम महिलाएं हिजाब, बुर्के व नक़ाब आदि को अपनी स्वतंत्रता व शिक्षा में बाधा मानती हैं। अनेक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि वस्तुतः भारतीय मुस्लिम स्त्री समुदाय की अशिक्षा का एक बड़ा कारण बुर्का, हिजाब व नक़ाब ही है। ईरान में राष्ट्रपति रईसी की हेलिकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु के पश्चात चुनाव कठिन लगने लगे थे। किंतु, अब जब चुनाव हो गये हैं तो ईरान एक नये स्वरूप में व नये मार्ग पर दिखाई दे रहा है। जेल में बंद नरगिस मोहम्मदी जैसी संघर्षशील महिला भी इन चुनावों के प्रति उदासीन व निराश थीं व उन्हें लगता था कि इन चुनावों का बहिष्कार ही एक मात्र उपाय है। न जाने क्या हुआ कि इस चुनाव में ईरान के सुधारवादियों,

विशेषतः पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद खातमी को नई आशा की किरण दिखाई दी। खातमी ने निष्क्रियता छोड़ी व मसूद पेज़ेश्कियान के समर्थन में कूद पड़े। चुनाव के प्रथम चरण में चुनाव चाहने वालों व बहिष्कार करने वालों के मध्य संघर्ष हुआ फलस्वरूप मतदान का प्रतिशत चालीस से भी नीचे चला गया था। दूसरे चरण में कट्टरपंथी जलीली व पेज़ेश्कियान के मध्य सीधे चुनाव में एकेडेमिक छवि वाले ज़रीफ ने पेज़ेश्कियान के लिए सघन अभियान चलाया। ज़रीफ़ व पेज़ेश्कियान ने घोषणा की कि, उनकी विदेश नीति न तो पश्चिम विरोधी है और न ही पूरब विरोधी। इन दोनों ने रईसी की रूस और चीन से लगाव की नीति की आलोचना की। ईरान के आर्थिक संकट को हाल करने हेतु भी उन्होंने अपना रोडमैप प्रस्तुत किया। परमाणु विषय पर व्यवस्थित बात करने व ईरान पर लगे अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों को हटाने हेतु भी वे संकल्पित दिखाई पड़े। यद्यपि ईरान की आंतरिक व्यवस्थाओं के कारण निर्णय प्रक्रिया पर पूर्ण अधिकार अब भी सर्वोच्च धार्मिक नेता ख़ामनेई का ही रहेगा। ख़ामनेई के कट्टरपंथी दृष्टिकोण को चुनाव के बाद की कुद्स फ़ोर्स से संबंधित से बातों से समझा जा सकता है जो उन्होंने कही है। ईरान की नीतियों पर कुद्स का प्रभाव सदैव रहता है। कुद्स फोर्स आईआरजीसी की बाहरी इकाई है व राष्ट्रपति के पास इस पर सीधे नियंत्रण का अधिकार नहीं होता है। केवल ईरान के सर्वोच्च नेता ही यह निर्णय करते हैं कि कुद्स को क्या करना चाहिए और क्या नहीं। ख़ामनेई ने समूची चुनावी प्रक्रिया के मध्य इस बात को दोहराते रहें हैं कि कुद्स फोर्स जो कर रही है वो देश की सुरक्षा नीतियों की दृष्टि से अनिवार्य है। इज़राइल-फ़िलिस्तीन संघर्ष में मध्य-पूर्व में ईरान ही हमास का प्रमुख समर्थक रहा है। पश्चिम विरोधी नीतियों के कारण भी इनकी स्थिति असहज होती रही है। ईरानी रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स ने तो सीधे इसराइल पर आक्रमण करके अभूतपूर्व स्थिति निर्मित कर दी थी। इससे दोनों देश आमने-सामने आ गए थे। ईरान में महिलाओं पर मॉरल पोलिसिंग के पक्ष में सुदृढ़ कट्टरपंथी क़ानून बने हुए हैं। पेज़ेश्कियान जो महिलाओं की नैतिक पोलिसिंग का विरोध करते हैं और पश्चिम के साथ टकराव की बजाय जुड़ाव का आग्रह रखते हैं। अब आर्थिक संकटों और सामाजिक उलझनों से त्रस्त ईरान स्वयं पेज़ेश्कियान की इस विजय से आश्चर्यचकित है। अब तक ईरान की कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका तथाकथित %प्रिंसिपलिस्टों% (रूढ़िवादियों) के नियंत्रण में थी। ये ईरान में किसी भी प्रकार के सुधारों के विरोधी थे। ईरान में चुनावों के मध्य ईरान सरकार में कभी मंत्री रहे सुधारवादी पेज़ेश्कियान को जब गार्डियन काउंसिल ने चुनाव में प्रत्याशी मान लिया तब ईरान के सुधारवादी गठबंधन ने अपना समर्थन उनके पक्ष में दे दिया। खातमी, उदारवादी मौलवी और 2013-21 तक राष्ट्रपति रहे हसन रूहानी ने उनका समर्थन किया। 5 जुलाई, 2024 के दूसरे चरण के चुनाव में पेज़ेश्कियान ने रूढ़िवादी प्रतिद्वंद्वी सईद जलीली को पराजित करके 53.6न्न वोट प्राप्त करके विजयश्री वरण किया। अब यह माना जा रहा है कि पचास वर्षों के पश्चात् प्रथम बार ईरान की बागडोर एक सुधारवादी राष्ट्रपति के हाथ में आ गई है। यद्यपि ईरान में सुधारवादी वर्ग ने ईरान के लिए जिन स्वप्नों को देखा है व जिस प्रकार का शासन वे चाहते हैं; उस मापदंड में पेज़ेश्कियान भी कोई आदर्श प्रत्याशी नहीं थे, तथापि अंधों में काना मामा के दृष्टिकोण से यह एक उत्तम चयन है। चुनाव अभियान में इन्होंने संकल्पित होकर पेज़ेश्कियान के लिए एकतरफ़ा अभियान चलाया। ईरान में निरन्तर कट्टरपंथियों के दुष्प्रभाव के कारण नागरिकों को चुनाव में उतनी रुचि नहीं थी किंतु पेज़ेश्कियान के पक्ष में सुधारवादियों के प्रबल अभियान ने स्थिति बदल दे थी। ईरानी जनता विशेषतः महिलाओं के मानस में यह भी बैठ चुका था कि पेज़ेश्कियान ने हिजाब के विरोध में सुदृढ़ता से अपनी बातें रखीं हैं व उन्हें प्रबल समर्थन भी मिल ही रहा है। इस स्थिति में जनता ने दूसरे चरण में पेज़ेश्कियान के पक्ष में भारी मतदान किया।

जलीली की रूढ़िवादिता भी उन्हें चुनाव हराने में एक बड़ा तत्त्व सिद्ध हुई। ईरान में राष्ट्रपति, सर्वोच्च निर्वाचित अधिकारी, मज़हब के संदर्भ में सीमित शक्तियाँ रखते हैं। कमान सर्वोच्च नेता के पास ही होती है। अब संभव है कि स्वयं को प्राप्त भारी जनादेश के साथ पेज़ेश्कियान देश में बदलाव के लिए सुदृढ़ता से अपने शासन में निर्णय लेंगे। ईरान के सर्वोच्च नेता, मज़हबी वर्ग को भी अब इस जनादेश के भीतर छिपे हुए संकेत को समझ लेना चाहिये और सुधारवाद को स्वीकार करना चाहिये। यदि ऐसा होता है तो पश्चिमी जगत द्वारा ईरान की ओर एक नई दृष्टि से देखा जा सकता है। ईरान में कट्टरपंथ से सुधारवाद का मार्ग अब जब प्रशस्त हो रहा है तब वहाँ इसे 'होमोजेनाइजेशन' अर्थात् 'दो धाराओं का मिलन' कहा जा रहा है।

त्तीसगढ़ के 9 जिलों में आज हैवी रेन का अलर्ट, सरगुजा-बस्तर संभाग में हो सकती है बारिश, रायपुर, दुर्ग में झमाझम बारिश

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के दुर्ग और रायपुर जिले में दोपहर के बाद झमाझम बारिश हुई। बारिश से लोगों को उमस और गर्मी से राहत मिली है। इससे पहले मौसम विभाग ने आज सरगुजा और बस्तर संभाग के जिलों में एक-दो जगहों पर भारी बारिश की संभावना जताई है। 9 जिलों में भारी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। सरगुजा, जशपुर, बलरामपुर, बस्तर, कोंडागांव, दंतेवाड़ा, सुकमा, कांकेर, बीजापुर, नारायणपुर में हैवी रेन कि संभावना है। पिछले 24 घंटे के दौरान प्रदेश में सबसे ज्यादा बारिश कोरबा जिले में 95 मिलीमीटर रिकॉर्ड की गई। वहीं, सरगुजा जिले में 75.7 मिमी, बलरामपुर जिले में 70, दंतेवाड़ा में 63.1, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 47.9 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई है। प्रदेश में अब तक औसत से 31 फीसदी बारिश कम हुई है। मौसम विभाग से मिले आंकड़ों के मुताबिक प्रदेश में अब तक 227.9 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है, जो औसत से 31 प्रतिशत कम है। 1 जून से अब तक प्रदेश में 332.4 मिलीमीटर बारिश हो जानी चाहिए थी। प्रदेश के 12 जिलों में अब तक औसत बारिश हो चुकी है। 20 जिलों में औसत से कम और दो जिलों सरगुजा और बेमेतरा में सूखे जैसे हालात हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक प्रदेश में सबसे ज्यादा अधिकतम तापमान राजनांदगांव में रिकॉर्ड किया गया। यहां तापमान 34 डिग्री रहा। वहीं, सबसे कम न्यूनतम तापमान 21.1 डिग्री नारायणपुर में दर्ज किया गया। रायपुर में 33.2 डिग्री, बिलासपुर में 33 और अंबिकापुर में 30.9 डिग्री टेंपरेचर रहा।

सरगुजा संभाग में पिछले 3 दिनों में अच्छी बारिश हुई है। उत्तर छत्तीसगढ़ के जिलों में तीन दिनों में ही 229 मिमी बारिश से खेत, तालाब लबालब हो गए हैं। वहीं, शुक्रवार शाम सरगुजा में आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई। मौसम विभाग के मुताबिक आगामी दो दिनों तक उत्तर छत्तीसगढ़ के जिलों में अच्छी बारिश होगी।

दुर्ग जिले में पिछले तीन-चार दिनों से बारिश नहीं होने के कारण लोग उमस और गर्मी से परेशान थे, लेकिन शुक्रवार शाम मौसम का मिजाज बदला और रातभर हल्की बारिश होती रही।लोगों ने राहत की सांस ली है। शाम 6 बजे से ठंडी हवाओं के साथ रिमझिम बारिश हुई। मौमस विभाग के मुताबिक आज भी जिले में बारिश की संभावना है।

छत्तीसगढ़ मंत्रिमंडल ने किए रामलला के दर्शन

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)।सीएम विष्णु देव साय समेत छत्तीसगढ़ के पूरे मंत्रिमंडल ने अयोध्या में रामलला के दर्शन किए। शनिवार को सुबह रायपुर से सभी मंत्री रवाना हुए थे। अयोध्या पहुंचने के बाद रामलला दर्शन के साथ ही हनुमानगढ़ी, सरयू घाट में भी मुख्यमंत्री और मंत्रियों ने पूजा की। इस मौके पर शिवरीनारायण से बेर की टोकरी समेत कई चीजें भी रामलला को भेंट की गई। अयोध्या पहुंचने के बाद सीएम साय ने कहा कि बहुत ही आनंदित हूं, प्रभु श्रीराम के चरणों को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं। साय सरकार का ये अयोध्या दर्शन कार्यक्रम एक दिन का ही है। शाम तक सभी मंत्री लौट आएंगे।

सीएम ने सोशल मीडिया में लिखाः मुख्यमंत्री साय ने दर्शन के बाद तस्वीरें शेयर कर लिखा कि, प्रभु श्रीराम के साक्षात दर्शन पाकर धन्य महसूस कर रहा हूं। सियावर रामचंद्र की कृपा हम सब पर सदैव बनी रहे। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्पित प्रयासों से इस भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है, जिससे करोड़ों सनातनियों के आस्था को बल मिला है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चंपत राय जी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

कांग्रेस बोली- घर का जोगी जोगड़ाः मंत्रिमंडल के अयोध्या दौरे को कांग्रेस ने नौटंकी बता दिया। प्रवक्ता सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ की सरकार बने 8 महीने से ज्यादा समय हो चुका है, अब तक मुख्यमंत्री अपने मंत्रिमंडल के साथ कौशल्या माता के दर्शन करने नहीं पहुंचे। जो विश्व का एकमात्र ऐसा मंदिर है, जहां कौशल्या मां की गोद में भगवान राम विराजमान है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ को भगवान राम का ननिहाल माना जाता है। चंदखुरी में भांचा राम के दर्शन करने तो सरकार के मंत्री नहीं गए और अयोध्या जा रहे हैं। घर का जोगी जोगड़ा आन गांव का सिद्ध। इसका अर्थ है कि ' अपने गांव घर की जगह अन्यत्र अधिक सम्मान'। सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने राम वन गमन पथ प्रोजेक्ट शुरू किया था, जिसे द्वेष के चलते भाजपा की सरकार ने बंद कर दिया। भाजपा के लोगों को राम के काम में भी द्वेष दिखाई देता है। अयोध्या जाने की यह सिर्फ नौटंकी है।

नाबालिग लड़की ने बॉयफ्रेंड के 17 टुकड़े किए, सऊदी अरब से मिलने छत्तीसगढ़ बुलाया था

लिव-इन पार्टनर के साथ मिलकर मार डाला

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में 16 साल की लड़की ने अपने बॉयफ्रेंड को गला रेत कर मार डाला। इसके बाद शव के 17 टुकड़े किए और स्कूल बैग-बोरी में भरकर डैम में फेंक दिया। इसके लिए लड़की ने अपने लिव-इन पार्टनर की मदद ली। पुलिस ने दोनों आरोपियों को ओडिशा से गिरफ्तार किया है। हैरानी की बात यह है कि लड़की ने यह साजिश पैसों के लालच में रची। इसके लिए उसने सऊदी अरब से बॉयफ्रेंड को मिलने के लिए बुलाया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों के पास से चोरी की सोने की चेन, मोबाइल और कैश बरामद किया है।

जानकारी के मुताबिक, पाली क्षेत्र के चैतमा निवासी 16 साल की लड़की और झारखंड के रांची के रहने वाले वसीम अंसारी (26 वर्ष) की जान पहचान सोशल मीडिया पर हुई। दोनों के बीच बातचीत होने लगी। पहले वे दोस्त बने और फिर उनमें प्यार हो गया। दोनों करीब साढ़े 3 साल से एक-दूसरे को जानते थे।

चाकू से काटा गला, फिर किए टुकड़ेः वसीम करीब ढाई साल पहले किसी प्राइवेट कंपनी में काम करने के लिए सऊदी अरब चला गया। इस दौरान लड़की और वसीम की आपस में बात होती थी। लड़की ने वसीम को मिलने के लिए बुलाया। उसके कहने पर वसीम पहले दिल्ली और फिर झारखंड गया। हालांकि वह अपने घर न जाकर बिलासपुर पहुंचा।वहां आरोपी लड़की उसे बोलेरो किराये पर लेकर लेने के लिए पहुंची थी। वसीम को लेकर लड़की अपने घर लाई और वहीं रुकवा दिया। आरोप है कि साजिश के तहत 9 जुलाई की रात लड़की के घर में पीछे के रास्ते से रजा खान दाखिल हुआ। उसने मुर्गा काटने वाले चाकू से वसीम के गले पर वार कर दिया। हमला होते ही वसीम ने चिल्लाना शुरू कर दिया। आरोप है कि इस पर लड़की और रजा खान ने उसे पकड़ा और उसी चाकू से गला काट कर अलग कर दिया। इसके बाद उसके शव के टुकड़े किए और उन्हें बैग में भरकर स्कूटी से ले जाकर गोपालपुर डैम में फेंक दिया।

पुटू खाने से एक ही परिवार के चार लोग बीमार

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। जिले में जंगली पुटू खाने से एक ही परिवार के 4 लोगों की तबीयत बिगड़ गई। सभी लोगों को आनन-फानन में इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार जारी है। वहीं एक ही हालत गंभीर बताई जा रही है। यह मामला हरदीबाजार इलाके का है।

जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार बीती रात पूरा मिरी परिवार रात के वक्त सभी ने एक साथ खाना खाया। खाने में पुटू सब्जी का सेवन किए। उसके बाद सभी अपने कमरे में सोने चले गए। इसके बाद एक-एक कर चारों की तबीयत बिगड़ने लगी। रात करीब 3 बजे आनन-फानन में सभी को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। तत्काल उपचार मिल जाने से सभी की जान बच गई।

मरीज ने बताया कि बलौदाबाजार से पुटू खरीद कर लाया था। अधिक मात्रा में पुटू होने के कारण एक दिन बनाकर खाए। उसके बाद आधे पुटू को फ्रिज में रख दिए। अगले दिन शुक्रवार को सब्जी बनाकर खाए और अचानक यह हालत हो गई।

हरदीबाजार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में हरिश्चंद्र मिरी, संगीता बाई मिरि, प्रेमलता मिरी, चंपा बाई मिरि और मुकेश कुमार मिरि को पेट दर्द और बेचैनी घबराहट की हालत में स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। हरदीबाजार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के सहायक चिकित्सा अधिकारी युधेश सांडे ने बताया कि सभी की हालत ठीक है। समय रहते इलाज शुरू हो गया, नहीं तो बड़ी घटना घट सकती थी। सहायक चिकित्सा अधिकारी ने लोगों को संदेश देते हुए कहा कि बारिश के समय जंगली पुटू ना खाएं और अपने आसपास को साफ-सुथरा बनाकर रखें। गड्ढों में पानी भरने ना दें, इससे मच्छर पैदा होती है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां हो जाती है।

स्कूल जर्जर हुआ तो विधवा ने दिया अपना घर, बेटे के साथ झोपड़ी में रह रही

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)।छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के मुड़ागांव में स्कूल 3 साल से पीएम आवास में संचालित हो रहा है। ये आवास भी एक विधवा महिला ने दिया है। महिला का नाम गुनो बाई है, जो विधवा है। गांव के 22 बच्चों के भविष्य के लिए गुनो बाई अपने बेटे के साथ खुद झोपड़ी में रह रही है। बताया जा रहा है कि सरकार ने स्कूल मरम्मत के लिए 90 करोड़ रुपए मंजूर किए थे, जिससे 1300 स्कूल भवनों की मरम्मत होनी थी। अब तक सिर्फ 550 भवनों की ही मरम्मत हो पाई है। गरियाबंद जिले के 750 स्कूल जर्जर हैं, जिसमें मैनपुर ब्लॉक के मुड़ागांव का चचरापारा प्राथमिक स्कूल भी शामिल है।

स्कूल जतन योजना के तहत 10 लाख की मंजूरी

कांग्रेस सरकार ने स्कूल जतन योजना के तहत चचरापारा के स्कूल भवन मरम्मत के लिए 10 लाख से ज्यादा की मंजूरी दी थी। हालांकि यह राशि काम के चरणों के हिसाब से अलग-अलग किस्त में दी जाती है। अब प्रशासन और शिक्षा विभाग ने न तो मरम्मत कराई और न ही कोई निर्माण कराया। लिहाजा यह टेंडर भी अधर में ही है। बताया जा रहा है कि मैनपुर ब्लॉक में 267 स्कूल भवन में से सिर्फ 66 भवन ही ₹श्वस् विभाग ने मरम्मत कराए हैं।

नए भवन के लिए राशि मंजूर हुई, पैसा कहां गया पता नहीं

गांव के पंच कपूर चंद मांझी ने कहा कि चाचारापारा प्राथमिक स्कूल 1997 में बने जर्जर भवन में संचालित हो रहा था। इसके बाद 2006 में नए स्कूल भवन के लिए 4 लाख 18 हजार की मंजूरी मिली। भवन का जिम्मा पंचायत और हेड मास्टर को मिला था, लेकिन नींव निर्माण कराकर छोड़ दिया गया।

सरकारी रिकॉर्ड में भवन है, लेकिन हकीकत में गायब

ग्रामीण अशोक यादव ने कहा कि 2004 से मांग हुई तो 2006 में भवन की स्वीकृति मिली। अब भवन ही गायब हो गया है। सरकारी रिकॉर्ड में भवन है, इसलिए नया भवन नहीं मिल रहा। पुराने की मरम्मत के लिए रुपए आए, लेकिन कोई काम नहीं कराया गया। शिक्षा विभाग की लापरवाही बच्चों पर भारी पड़ रही है।

बच्चों को सुविधा देकर मेरी तकलीफ खत्म हुई

वहीं अपना पीएम आवास देने वाली गुनो बाई ने कहा कि जर्जर भवन में बच्चों की जान जोखिम में रहती है। उनकी तकलीफ को देखकर मैंने अपने आवास को स्कूल संचालन के लिए दिया है। मैं तीन साल से अपने पुराने मकान में रह रही हूं। बच्चों को सुविधा देकर मेरी सारी तकलीफ खत्म हो गई।

5 क्लास और रूम एक

चचरापारा प्राथमिक स्कूल की शिक्षिका कुंती जगत ने कहा कि इस स्कूल में 2 शिक्षक, 22 बच्चे हैं और 5 कक्षाएं लगती हैं। सभी को एक ही छोटे से कमरे में बैठाकर पढ़ाना पड़ता है। पॉलीथिन घेर कर वहीं रसोई बनाई गई है जहां मिड-डे मिल तैयार होता है।

भिलाई में कॉलेज छात्रा से ऑटो में छेड़छाड़

लड़की के बगल में बैठा आरोपी कर रहा था बैड टच, बोला- जिसे बताना है बता दो

मीडिया ऑडीटर, भिलाई (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के भिलाई में एक कॉलेज छात्रा से ऑटो में छेड़छाड़ की वारदात हुई है। छात्रा ने आरोपी के खिलाफ भिलाई नगर थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने परिवारद्धर के बाद आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम अशोक सोनी (40) है, जो अहमद नगर बड़ी मस्जिद के पीछे रहता है।

भिलाई नगर थाना प्रभारी राजकुमार लहरे ने बताया कि बीएससी सेकंड इयर की स्टूडेंट ने छेड़छाड़ की शिकायत दर्ज कराई है। उसने बताया कि 12 जुलाई को वह कॉलेज से जल्दी अपने घर के लिए नकल गई थी। इसलिए उसने ऑटो किया और उस पर बैठ गई। उसने देखा कि ऑटो में पहले से एक व्यक्ति बैठा हुआ है।

दोपहर 1.45 बजे के करीब वो जैसे ही ऑटो ग्लोब चौक के पास पहुंचा। युवक उसके बगल से चिपक कर बैठ गया। इसके बाद वो अपने हाथों से छात्रा को बैड टच करने लगा। छात्रा के विरोध करने पर भी जब वह नहीं माना तो वो वहां उतर गई।

छात्रा ने बताया कि वह अपने स्पोर्ट्स टीचर को फोन करके बुलाया। ऑटो वाले को ग्लोब चौक के पास ही उतारने के लिए कहा। जब ऑटो वाले ने ग्लोब चौक के पास उतारा तो छेड़खानी करने वाला युवक भी वहीं उतरने लगा।

इस दौरान उसके साथ एक और आदमी ऑटो पर बैठा था, वह हंस रहा था, तभी वहां लड़की का स्पोर्ट्स टीचर आ गया। उसके सामने भी आदमी ने उसे टच किया। आरोपी ने कहा कि उसका नाम अशोक सोनी है, वह अहमद नगर कैंप 2 में रहता है, जिससे जो बताना है बता दो। आरोपी को भिलाई नगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

छत्तीसगढ़ के कारोबारी पर फायरिंग

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)।रायपुर के तेलीबांधा थाना क्षेत्र में कंस्ट्रक्शन कारोबारी प्रह्लाद राय अग्रवाल पर गोली चलाई गई है। बताया जा रहा है कि 2 बार फायरिंग की गई, जिसमें एक हवा में और दूसरी गोली कार पर की गई है, जो शीशे पर लगी। आशंका जताई जा रही है कि लॉरेंस बिश्नोई और अमन साहू गैंग ने अटैक किया है। घटना के विरोध में दीपक बैज ने कहा है कि सरकार अयोध्या में है और यहां गोलीबारी चल रही है। 24 जुलाई को विधानसभा घेरेंगे।

बताया जा रहा है कि वारदात को कारोबारी को डराने के लिए किया गया है, जिससे वह लेवी की रकम दे सकें। वारदात किन लोगों ने और क्यों की है फिलहाल पता नहीं चल पाया है। वारदात सुबह 11 बजे हुई है। अग्रवाल का ऑफिस तेलीबांधा क्षेत्र के उद्योग भवन के पास है। भागते वक्त बाइक सवार शूटरों की तस्वीर सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है।

दो बाइक सवारों ने गोली चलाई

जानकारी के मुताबिक दो बाइक सवारों ने गोली चलाई है। बताया जा रहा है कि दोनों युवक मुंह पर मास्क लगाकर आए थे। वारदात के बाद भागते हुए सीसीटीवी कैमरे में तस्वीरें कैद हुई हैं।

झारखंड में सड़क निर्माण का काम कर रही अग्रवाल की कंपनी

बताया जा रहा है कि कारोबारी प्रह्लाद अग्रवाल सूरजपुर जिले के रहने वाले हैं। उनकी और उनके बेटे राजेश अग्रवाल की कंपनी छत्तीसगढ़ की बड़ी कंस्ट्रक्शन कंपनी है, जो सड़क निर्माण से जुड़े काम करती है। इस कंपनी को झारखंड में भी सड़क निर्माण का काम मिला है।

बस्तर में पोटाकेबिन की छात्रा की मलेरिया से मौत

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में मलेरिया से दूसरी क्लास की छात्रा की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि छात्रा कुछ दिनों से बीमारी से जूझ रही थी। पोटाकेबिन अधीक्षिका ने इसकी जानकारी परिजनों को दी। परिजनों ने मेकाज में भर्ती करवाया, जहां छात्रा ने दम तोड़ दिया। मामला तारलागुड़ा थाना क्षेत्र का है। दरअसल, बीजापुर जिले के तारलागुड़ा पोटाकेबिन में छात्रा दीक्षिता रेगा (09) दूसरी क्लास में पढ़ाई करती थी। छात्रा तारलागुड़ा से महज 15 से 18 किमी की दूरी पर स्थित दुधेड़ा की रहने वाली थी। बीजापुर डीएमसी का कहना है कि 7 जुलाई को परिजन बच्ची को घर से पोटाकेबिन छोड़े थे। तब से उसकी तबियत खराब थी। जिसका गांव के अस्पताल में इलाज चल रहा था।

अधीक्षिका ने परिजनों को भी इसकी जानकारी दी थी, फिर 9-10 जुलाई को परिजन बच्ची को लेकर चले गए थे। उसे सबसे पहले बीजापुर जिला अस्पताल में भर्ती करवाया था, फिर यहां जब उसकी स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो उसे जगदलपुर के डिमरापाल मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था। जहां एक दिन पहले इलाज के दौरान बच्ची ने दम तोड़ दिया।

जगदलपुर में पुलिस ने पकड़ी 1 करोड़ रुपए की कार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में बस्तर जिले की ट्रैफिक पुलिस ने लगभग 1 करोड़ रुपए की लग्जरी कार पकड़ी है। चालक पिछले 2 दिनों से जगदलपुर की सड़कों पर वाहन दौड़ा रहा था। दिल्ली पासिंग की महंगी कार और इसके तेज साउंड को देखते हुए पुलिस को शक हुआ और जांच के लिए कार को पकड़ लिया। कार के दस्तावेज खंगाले जा रहे हैं। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है। बताया जा रहा है कि कांकेर जिले के रहने वाले एक युवक ने कार को दिल्ली से करीब 30 लाख रुपए में सेकंड हैंड खरीदा है। कार का नंबर छ्रु8 छ्य 5506 है। इस कार में युवक अपने दोस्त के साथ जगदलपुर आया हुआ था। वहीं इस स्पोर्ट्स कार को देख पुलिस को संदेह होने पर शनिवार सुबह वाहन को सिटी कोतवाली में खड़ा करवा दिया गया है।

इस मामले की जानकारी जैसे ही शहर के लोगों को मिली लोग भी एकाएक सिटी कोतवाली पहुंचने लगे। शहर भर में यह चर्चा का विषय बन गया है। कुछ ने इस महंगी लग्जरी कार के साथ सेल्फी भी ली।

जम्मू-कश्मीर के एलजी की शक्तियां बढ़ीं

दिल्ली/श्रीनगर,एजेंसी। केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल की प्रशासनिक शक्तियां बढ़ा दी हैं। दिल्ली की तरह अब जम्मू-कश्मीर में राज्य सरकार एलजी की मंजूरी के बिना अफसरों की पोस्टिंग और ट्रांसफर नहीं कर सकेगी। गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 55 के तहत बदले हुए नियमों को नोटिफाई किया है, जिसमें एलजी को ज्यादा ताकत देने वाली धाराएं जोड़ी गई हैं। उपराज्यपाल के पास अब पुलिस, कानून व्यवस्था और ऑल इंडिया सर्विस से जुड़े मामलों में ज्यादा अधिकार होंगे। सूत्रों के हवाले से जानकारी दी कि केंद्र ने सिर्फ व्यापार नियमों के लेनदेन में संशोधन किया गया है। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 में बाकी चीजों का जिक्र पहले से ही था। हालांकि एजेंसी ने गृह मंत्रालय का जो नोटिफिकेशन जारी किया है, उसमें पहले के प्रावधान और 12 जुलाई को किए गए बदलावों के बीच स्पष्ट अंतर की जानकारी नहीं दी गई है। जम्मू-कश्मीर में इसी साल सितंबर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। ताजा फैसले के बाद राज्य में सरकार किसी भी पार्टी की बने, लेकिन अहम फैसले लेने की शक्तियां स्न्न के पास ही रहेंगी।

पुलिस कस्टडी से भागे 3 बाल कैदी, एसपी ने दोषी होमगार्ड और सिपाही को किया सस्पेंड

बिहार ,एजेंसी। उत्तर प्रदेश पुलिस जो अपनी कार्यशैली को लेकर अक्सर चर्चा में रहती है, कभी रिश्वत लेते तो कभी जनता से अभद्रता करते इनके वीडियो वायरल होते रहते हैं, जो खाकी पर सवालिया निशान खड़ा कर देते हैं। अब ऐसा ही एक मामला सामने आया है मेरठ जनपद से, जहां 3 नाबालिग कैदी पुलिस के कैद से फरार हो गए और पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, उत्तर प्रदेश के शामली से मेरठ के सुधार गृह ले जाए जा रहे 3 किशोर पुलिस के कब्जे से भाग निकले। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, यह घटना शामली जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र के कुडाना गांव में हुई। पुलिस अधीक्षक (एसपी) अभिषेक ने बताया कि शामली से एक निजी कार में सवार होकर मेरठ के सुधार गृह ले जाए जा रहे तीन किशोर पुलिस के कब्जे से भाग निकले। तीनों किशोरों के खिलाफ शुक्रवार को कुडाना गांव में चोरी का मामला दर्ज किया गया था। एसपी ने यह भी बताया कि ड्यूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में तीन पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है।

मंत्रिमंडल के साथ अयोध्या पहुंचे सीएम विष्णु देव

छत्तसीगढ़ ,एजेंसी। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अगुवाई में शनिवार को उनका पूरा मंत्रिमंडल अयोध्या पहुंचा, जहां उन्होंने रामलला का दर्शन कर छत्तीसगढ़ की खुशहाली के लिए कामना किया। ष्टरूविष्णु देव साय और डिप्टी सीएम अरुण साव और कैबिनेट के सदस्यों ने अयोध्या में सरयू घाट पर पूजा की जिसके बाद उन्होंने हनुमानगढ़ी मंदिर में पूजा-अर्चना की। इस दौरान रामलला को शिवरीनारायण से बेर फल के साथ विष्णुभोग चावल, कोसा वस्त्र, करी लड्डू, अनरसा और सीताफल सहित अन्य सामग्री भी भेंट की। विष्णु देव साय के साथ उपमुख्यमंत्री द्वय अरुण साव,विजय शर्मा मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, मंत्री लखनलाल देवांगन, मंत्री टंकराम वर्मा, मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, मंत्री दयाल दास बघेल विशेष विमान से रवाना हुए। मुख्यमंत्री साय ने रवाना होने से पहले मीडिया से चर्चा में कहा कि आज पूरे मंत्रिमंडल के साथ अयोध्या जा रहे हैं, भगवान राम अपने वनवास काल में शबरी के झूठे बेर खाये थे इस लिहाज से हम रामलला के लिए शिवरीनारायण के बेर, विष्णुभोग चावल, कोसा वस्त्र, करी लड्डू समेत अन्य सामग्री लेकर जा रहे हैं।

फर्जी निकाह केस में इमरान खान बरी

इस्लामाबाद, एजेंसी। फर्जी निकाह केस में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को इस्लामाबाद कोर्ट ने शनिवार को बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि इन्हें फौरन रिहा किया जाए। इमरान खान एक साल से 3 अलग-अलग मामलों में जेल में बंद थे। इस आदेश के बाद उनकी रिहाई हो सकती है। उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के चेयरमैन गौहर खान ने इस फैसले को देश की जीत बताया है इमरान 350 दिनों से रावलपिंडी की अदियाला जेल में हैं। इस्लामाबाद की स्थानीय कोर्ट ने उन्हें 5 अगस्त, 2023 को तोशाखाना केस में दोषी करार दिया था। इसके बाद उन्हें इस्लामाबाद के जमान पार्क स्थित उनके घर से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। बाद में उन्हें 2 और मामलों में दोषी करार दिया गया था।

इमरान की अभी रिहाई मुश्किल लग रही है। उन पर 100 से ज्यादा मामले दर्ज हैं। पाकिस्तान की जियो न्यूज के मुताबिक, लाहौर पुलिस की एक टीम 9 मई की हिंसा से जुड़े 3 मामलों में इमरान खान को हिरासत में लेने के लिए निकल पड़ी है।

एक खबर यह भी है कि इमरान की पत्नी बुशरा को तोशाखाना से जुड़े एक मामले में हिरासत में लिया जा सकता है। जांच एजेंसी ह्वक्क की एक टीम भी जल्द ही एक्शन ले सकती है।

अंग्रेजी अखबार डॉन के मुताबिक, अगर इमरान जेल से बाहर आते हैं तो, वे पाकिस्तान में दोबारा चुनाव की मांग को उठाएंगे। इस साल हुए आम चुनाव में इमरान की तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी आधिकारिक तौर पर हिस्सा नहीं ले पाई थी। इमरान खान के एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर 5 जुलाई को हुई एक पोस्ट में इस साल 8 फरवरी को हुए आम चुनावों को फर्जी बताया गया था।

जिन 3 मामलों में दोषी थे इमरान उन सब में रिहा: केस- 1 बुशरा बीबी के पूर्व पति, खावर फरीद मनेका ने बुशरा और इमरान पर आरोप लगाया था कि दोनों ने गैर इस्लामिक तरीके से शादी की है। बुशरा के तलाक के बाद इद्दत का समय पूरा होने से पहले ही खान ने उनसे शादी कर ली थी। इस मामले में 3 फरवरी को बुशरा और इमरान को दोषी ठहराया गया था। उन्हें 7 साल की सजा और 5 लाख पाकिस्तानी रूपए का जुर्माना लगाया था। इस केस में उन्हें आज रिहाई मिल गई।

केस-2 इससे पहले इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने 3 जून को इमरान खान को सबूतों के अभाव में साइफर केस (सीक्रेट लेटर चोरी) में बरी कर दिया था। उनको इस्लामाबाद की विशेष अदालत ने 10 साल की सजा सुनाई थी। इमरान खान को 29 अगस्त 2023 को साइफर गेट स्कैंडल में हिरासत में लिया गया था।

केस-3 तोशाखाना केस में खान को 1 अप्रैल को रिहा कर दिया गया था। उनकी 14 साल की सजा को रद्द कर दिया गया था।

जेल में रहकर भी सबसे ज्यादा सीटें जीतीं: पाकिस्तान में 8 फरवरी को आम चुनाव हुए। इनसे पहले खान को एक के बाद एक लगातार 3 मामलों में दोषी करार दे दिया गया था। इससे वे चुनाव में हिस्सा नहीं ले पाए थे। चुनाव से पहले उनका पार्टी चुनाव चिह्न छीन लिया गया था। पार्टी के सभी नेता निर्दलीय चुनाव लड़े थे। इसके बावजूद खान की पार्टी क्क्चढ्ढ के समर्थकों को पाकिस्तान की नेशनल असेंबली की 342 सीटों में से 93 सीटें मिलीं।

साइफर केस- इस केस की चार्जशीट में पूर्व प्रधानमंत्री के पास एक सीक्रेट लेटर यानी साइफर होने की बात कही गई। खान पर आरोप लगाया गया है कि उन्होंने देश की गोपनीय जानकारी का गलत इस्तेमाल किया।

इस साइफर को पिछले साल मार्च में अमेरिका में तैनात पाकिस्तानी एम्बेसेडर असद मजीद खान ने विदेश मंत्रालय को भेजा था। खान ने इसे पढ़ने के बहाने अपने पास रख लिया और बाद में कहा कि यह लेटर खो गया है। हालांकि, वो साइफर को कई रैलियों में खुलेआम लहरा चुके हैं।

बिहार में बिजली गिरने से 24 घंटे में 21 मौतें

नई दिल्ली ,एजेंसी। बिहार में लगातार बारिश से नदियां उफान पर हैं। भागलपुर में गंगा और कोसी के कटाव में कई घर बह गए हैं। यहां रोहतास के मां तुतला भवानी धाम वाटरफॉल में शनिवार सुबह पानी का जलस्तर अचानक बढ़ गया। 6 लोग तेज बहाव में फंस गए।

वन विभाग की टीम ने उन्हें रेस्क्यू किया। भारी बारिश के बीच बिजली गिरने से पिछले 24 घंटे में 12 जिलों में 21 लोगों की मौत हुई हैं। उधर, उत्तर प्रदेश में नेपाल से लगे जिलों बाढ़ जैसे हालात हैं।

पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महराजगंज के करीब 800 गांव लगातार तीसरे दिन भी बाढ़ की चपेट में हैं। शाहजहांपुर में दिल्ली-लखनऊ हाईवे लगातार दूसरे दिन बंद है। बलरामपुर में प्राइमरी स्कूल में 3 फीट तक पानी भरा है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, हरियाणा, जम्मू, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में आज भारी बारिश का अलर्ट है। उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, विदर्भ (महाराष्ट्र), छत्तीसगढ़ में तूफान और बिजली गिरने का अलर्ट है। मौसम विभाग ने कोंकण, गोवा, मध्य महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, तेलंगाना, असम, मेघालय, उपहिमालयी पश्चिम बंगाल, सिक्किम, बिहार, अरुणाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, पूर्वी-पश्चिमी उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, हरियाणा, जम्मू, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और अंडमान-निकोबार मिलाकर कुल 21 जगह बारिश का अलर्ट जारी किया है।

ममता बोलीं- एनडीए सरकार अस्थिर, कार्यकाल पूरा करना मुश्किल

मुंबई ,एजेंसी। ममता ने शुक्रवार को मुंबई में उद्धव ठाकरे के आवास मातोश्री में उनसे मुलाकात की। यह लोकसभा चुनावों के बाद दोनों नेताओं के बीच पहली बैठक थी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दावा किया कि भाजपा-नेतृत्व वाली एनडीए सरकार अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएगी, क्योंकि यह सरकार स्थिर नहीं है। जब उनसे ऐसा कहने की वजह पूछी गई, तो उन्होंने कहा कि खेला शुरू हो गया है। यह जारी रहेगा। ममता ने यह बात शुक्रवार को मुंबई में उद्धव ठाकरे से उनके आवास मातोश्री में मुलाकात के दौरान कही। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में वे ठाकरे के लिए प्रचार करेंगीं। शिवसेना और तृणमूल कांग्रेस इंडिया ब्लॉक में साझेदार हैं। यह लोकसभा चुनावों के बाद दोनों नेताओं के बीच पहली बैठक थी। बिजनेसमैन मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी की शादी में शामिल होने मुंबई पहुंचीं ममता ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार से भी मुलाकात की। ये मुलाकात दक्षिण मुंबई स्थित पवार के निवास सिल्वर ओक पर हुई। हालांकि ठाकरे ने ममता के साथ बैठक को राजनीतिक की बजाय पारिवारिक मुलाकात बताया। ठाकरे ने पत्रकारों से कहा, हमारे बीच भाई-बहन का रिश्ता है। वह पहले भी मेरे घर आ चुकी हैं। यह एक पारिवारिक मुलाकात थी।

संविधान की आत्मा पर प्रहार करने वाले संविधान हत्या दिवस मनाएंगे-प्रियंका गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी। । कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर शनिवार को निशाना साधते हुए कहा कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि संविधान और लोकतंत्र की आत्मा पर प्रहार करने वाले लोग संविधान हत्या दिवस मनाएंगे। केंद्र ने 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी दिन 1975

में आपातकाल की घोषणा की गई थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि संविधान हत्या दिवस 25 जून को मनाया जाना ''हमें याद दिलाएगा कि जब संविधान को रौंदा गया था, तो क्या हुआ था। प्रियंका ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत की महान जनता ने ऐतिहासिक लड़ाई लड़कर अपनी आजादी और अपना संविधान हासिल किया है। जिन्होंने संविधान को बनाया, जिनकी संविधान में आस्था है, वे ही संविधान की रक्षा करेंगे।

भारत की महान जनता ने ऐतिहासिक लड़ाई लड़कर अपनी आजादी और अपना संविधान हासिल किया है।

अमीरों को 125 यूनिट मुफ्त बिजली बंद

अरूणाचंल प्रदेश। हिमाचल प्रदेश मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को घरेलू उपभोक्ताओं के लिए शून्य बिजली बिल के प्रावधानों को युक्तिसंगत बनाने से संबंधित योजना को मंजूरी दे दी। इस योजना में सब्सिडी को %एक परिवार एक मीटर% तक सीमित करना और बिजली कनेक्शन को राशन कार्ड से जोड़ना शामिल है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में यहां हुई बैठक में राज्य मंत्रिमंडल ने मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्रियों, विधानसभा अध्यक्ष, विधानसभा उपाध्यक्ष, मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, पूर्व मंत्रियों, बोर्डों के चेयरमैन/सलाहकार सहित अन्य अधिकारियों और सभी इनकम टैक्स भरने वालों को अब 125 फ्री यूनिट बिजली नहीं मिलेगी।

अमरवाड़ा में 16 साल बाद जीती भाजपा

छिंदवाड़ा ,एजेंसी। अमरवाड़ा विधान सभा उपचुनाव में भाजपा ने 16 साल बाद जीत दर्ज की। 2008 के विधानसभा चुनाव में अमरवाड़ा से भाजपा के प्रेमनारायण ठाकुर ने जीत दर्ज की थी। उन्होंने गोंगपा के मनमोहन शाह बट्टी को मात्र 437 वोट से हराया था। आज उपचुनाव में भाजपा कैंडिडेट कमलेश शाह ने 3027 वोटों से जीत दर्ज की। शनिवार को पीजी कॉलेज में हुई काउंटिंग में काफी उलटफेर होते रहे। पहले तीन राउंड तक भाजपा आगे रही। फिर उतार-चढ़ाव के साथ 17वें राउंड तक कांग्रेस के धीरन शाह लीड बनाए हुए थे। आखिरी के तीन राउंड में भाजपा को लगातार बढ़त मिली। कांग्रेस ने दो राउंड की काउंटिंग में गड़बड़ी की आशंका जताई। कांग्रेस समर्थकों ने रिकाउंटिंग की मांग की है। कांग्रेस प्रत्याशी धीरेंद्र शाह ने भी रीकाउंटिंग कराने की लिखित मांग की। अमरवाड़ा विधानसभा उपचुनाव में 10 जुलाई को 332 मतदान केंद्रों पर हुई वोटिंग के लिए 17 टेबल लगाई गई थी। पोस्टल बैलेट्स की गिनती के लिए 4 टेबल लगाई गईं। सबसे पहले डाक मतपत्रों की गई। यहां कुल 9 प्रत्याशी मैदान में थे। अमरवाड़ा विधानसभा उपचुनाव में जीत दर्ज कराने वाले कमलेश शाह 2023 के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर विधायक चुने गए थे। कमलेश ने बीजेपी की मोनिका बट्?टी को हराया था। लोकसभा चुनाव से पहले कमलेश ने बीजेपी जॉइन कर ली और 29 मार्च को विधायक पद से इस्तीफा दे दिया था। लोकसभा चुनाव में नकुलनाथ को हराने के बाद भाजपा ने विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज की है। इससे पहले 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने जिले की सभी 7 छिंदवाड़ा, सौंसर, पांढुर्ना, परासिया, चौरई, अमरवाड़ा और जुन्नारदेव सीटें जीती थीं। अमरवाड़ा से कमलेश शाह विधायक थे। 2024 के उपचुनाव में भी कलमेश शाह विधायक चुने गए, लेकिन इस बार वे भाजपा के टिकट पर लड़े।

आप नेता संजय सिंह का दावा- केजरीवाल का 8 किलो तक घटा वजन, 50 से नीचे गिरा शुगर लेवल

नई दिल्ली ,एजेंसी। आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने शनिवार को दावा किया कि भाजपा और उसकी केंद्र सरकार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जिंदगी से खेल रही है, जिनका वजन 8.5 किलोग्राम कम हो गया है और जेल में रहने के दौरान उनका रक्त शर्करा स्तर पांच बार 50 एमजी/डीएल से नीचे चला गया। उनके दावों पर भाजपा की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। सिंह ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''उनकी स्वास्थ्य स्थिति ऐसी है कि अगर उन्हें जल्द ही जेल से बाहर नहीं लाया गया और चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई तो उनके साथ कोई भी गंभीर घटना घट सकती है।'' उन्होंने कहा कि जब 21 मार्च को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में केजरीवाल को गिरफ्तार किया था, तब उनका वजन 70 किलोग्राम था। उन्होंने दावा किया कि अब उनका वजन घटकर 61.5 किलोग्राम रह गया है।

सिंह ने दावा किया कि उनके लगातार घटते वजन का कारण अज्ञात है, क्योंकि कोई जांच नहीं की जा सकी। उनका कहना है कि यह वजन घटना किसी गंभीर बीमारी का संकेत है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल का परिवार, आप और उनके शुभचिंतक जेल में उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर चिंतित हैं।

सीएम हेमंत ने दिल्ली में सोनिया गांधी से की मुलाकात

रांची ,एजेंसी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने आज शनिवार को कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी से मुलाकात की। हेमंत सोरेन पत्नी कल्पना सोरेन के साथ सोनिया से मिलने पहुंचे थे। जेल से रिहा होने के बाद हेमंत सोरेन की ये सोनिया गांधी से पहली मुलाकात है। मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि जेल से बाहर आने के बाद अब तक हमारी सोनिया गांधी से मुलाकात नहीं हुई थी। इसलिए उनसे मिलने आया हूं। पत्रकारों ने जब उनसे पूछा कि क्या सोनिया गांधी के साथ झारखंड विधानसभा चुनाव के मुद्दे पर बात करने के लिए आए थे। हेमंत सोरेन ने कहा कि नहीं, विधानसभा चुनाव के मुद्दे पर चर्चा समय-समय पर होती रहती है, विधानसभा के चुनाव आते रहते हैं। केंद्र सरकार द्वारा आपातकाल 1975 की याद में 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' घोषित करने पर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि जनता वह नहीं जो उन्हें लगता है। इस लोकतंत्र और इस देश की खूबसूरती है कि लोग काफी संवेदनशील होते हैं। बर्दाश्त करने की भी क्षमता रखते हैं लेकिन जब जनता अपने पर आती है तो वोट से उसका जवाब देती है।

बिहार के लिए जो भी संभव सहायता होगी वो केंद्र करेगी- मांझी

पटना ,एजेंसी। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर एक बार फिर सियासत तेज हो गई है। इस मुद्दे पर केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री जीतन राम मांझी ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि जब नीति आयोग ने फैसला कर रखा है कि वे किसी को विशेष राज्य का दर्जा नहीं देंगे। वैसी स्थिति में जब हम विशेष राज्य की बात करते हैं तो मेरे समझ से वो उचित नहीं है। मांझी ने कहा कि बिहार गरीब है, बिहार में हर तरह से सहायता की आवश्यकता है, इसके लिए पीएम मोदी प्रतिबद्ध हैं। पूर्वोत्तर पहले गरीब स्थिति में था आज उनको बढ़ाया गया है। बिहार के लिए जो भी संभव सहायता होगी वो केंद्र करेगी। बता दें कि जदयू प्रमुख बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग लंबे समय से करते रहे हैं। एक बार फिर जनता दल यूनाइटेड ने बिहार को स्पेशल स्टेटस देने की मांग का राग छेड़ दिया है। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) ने केंद्र सरकार से बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की। जदयू के वरिष्ठ नेता एवं बिहार के ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी ने गुरुवार को राज्य को विशेष दर्जा देने की मांग दोहराते हुए कहा कि भौगोलिक और ऐतिहासिक कारणों से बिहार प्राकृतिक संसाधनों से वंचित है।

तीर्थयात्रियों को ले जा रही बस का ट्रक के साथ भयानक एक्सीडेंट

नई दिल्ली ,एजेंसी। ओडिशा के मयूरभंज जिले में शनिवार को एक बस और ट्रक के बीच टक्कर हो जाने से तीन लोगों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हुए हैं। पुलिस ने यह जानकारी दी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना सुबह करीब साढ़े पांच बजे बेतनती पुलिस थाना क्षेत्र में बुदिखमारी स्कवायर के पास राष्ट्रीय राजमार्ग 18 पर हुई, जब बस, ट्रक से टकरा गई। बस में करीब 20 तीर्थयात्री सवार थे। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के समय बस हैदराबाद से गया जा रही थी। अधिकारी ने बताया, इस हादसे में बस चालक उदय सिंह की मौत हो गई। वह हैदराबाद के चारमीनार का रहने वाला था। उन्होंने बताया कि हादसे में घायल हुए यात्रियों को बारिपदा स्थित पंडित रघुनाथ मुर्मू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जयपुर में राष्ट्रीय करणी सेना, राजपूत करणी सेना में फायरिंग

जयपुर, एजेंसी। जयपुर में शुक्रवार रात करीब 8-30 बजे राष्ट्रीय करणी सेना के अध्यक्ष शिव सिंह शेखावत और श्री राजपूत करणी सेना के अध्यक्ष महिपाल सिंह मकराना के बीच मारपीट और फायरिंग हो गई। इसमें मकराना जख्मी हुए हैं। उन्हें हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है। घटना के दूसरे दिन पुलिस ने राष्ट्रीय करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव सिंह शेखावत को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने शेखावत के 5 और महिपाल सिंह मकराना के 2 साथियों सहित एक अन्य व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया है। शेखावत ने कहा

है कि मकराना चार लोगों के साथ चित्रकूट इलाके में स्थित मेरे कार्यालय में आया और फायरिंग कर दी। इस पर सिक्योरिटी गार्ड और अन्य लोगों ने उसे पकड़ा। उसके साथ मारपीट की। वहीं, महिपाल सिंह मकराना की पत्नी वर्षा ने शिव सिंह और उनके साथियों पर फायर करने के आरोप लगाए हैं। इस घटना के कुछ वीडियो भी सामने आए हैं। इनमें दोनों पक्ष मारपीट करते दिख रहे हैं। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ शनिवार सुबह चित्रकूट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। शिव सिंह शेखावत ने बताया, %मकराना का शुक्रवार को मेरे छोटे भाई के पास फोन आया था। कह रहा था कि बैठकर बात कर लेते हैं। सभी बात कर रहे थे। वो शायद नशे में था। इस बीच उसने मेरे ऊपर फायर कर दिया। फायर जमीन पर लगा। इसके बाद मेरे गनमैन से इसके सिर पर बंदूक का बट मार दिया।

लगता था मैं उसे हर गेंद पर... जेस एंडरसन ने विराट कोहली को लेकर कही बड़ी बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल में रिटायर हुए इंग्लैंड के दिग्गज तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने शुक्रवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना आखिरी टेस्ट मैच खेला। वहीं क्रिकेट की दुनिया में एंडरसन का नाम एक महान गेंदबाज के तौर पर शामिल है। एंडरसन ने संन्यास के बाद भारतीय सलामी बल्लेबाज विराट कोहली के साथ अपनी राइवलरी को लेकर अहम बात कही। साल 2014 में जब कोहली ने पहली बार इंग्लैंड का दौरा किया था तब एंडरसन ने उन्हें काफी परेशान किया था।

इसके बाद जब कोहली ने वापसी की और जब 2018 में वह इंग्लैंड गए तो एंडरसन को उन्होंने काफी परेशान कर दिया। एंडरसन एक भी बार कोहली को आउट नहीं कर पाए। इन दोनों की प्रतिद्वंद्विता का लुत्फ पूरा क्रिकेट जगत लेता था। एक स्विंग का बादशाह तो एक रन चेजर। लॉर्ड्स में अपना आखिरी टेस्ट मैच खेलने के बाद एंडरसन ने उनकी और कोहली के बीच की प्रतिस्पर्धा पर भी बात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि आप काफी उतार-चढ़ाव देखते हैं। कुछ सीरीजों में आप शानदार महसूस करते हैं और कुछ में नहीं, बल्लेबाज आपसे बेहतर कर जाता है। विराट कोहली जब शुरुआत में आए थे तो मुझे लगता था कि मैं उन्हें हर बॉल पर आउट कर सकता हूं। लेकिन हाल ही में मुझे लगा कि मैं उन्हें आउट नहीं कर सकता। आप काफी छोटा महसूस करते हो। कोहली और एंडरसन पहली बार साल 2014 में आमने-सामने हुए थे। इस दौरान 10 पारियों में एंडरसन ने पांच बार कोहली को अपना शिकार बनाया। 2016 में जब इंग्लैंड की टीम भारत दौरे पर आई तो कोहली ने एंडरसन को खूब छकाया। 2018 में टीम इंडिया ने फिर इंग्लैंड का दौरा किया और इस बार सभी को इंतजार था कि कोहली किस तरह से एंडरसन का सामना करते हैं। कोहली ने इस बार डटकर उनका सामना किया। एंडरसन इस बार कोहली को एक भी बार आउट नहीं कर पाए और कोहली के बल्ले से इस दौरे पर 700 से ज्यादा रन निकले। तीन साल बाद 2021 में एंडरसन ने कोहली को इंग्लैंड में दो बार आउट किया।

इटली के मुसेत्ती पहली बार सेमीफाइनल में

लंदन (एजेंसी)। इटली के लोरेंजो मुसेत्ती ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को हराकर विम्बलडन सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया और कैरियर में पहली बार वह किसी ग्रैंडस्लैम में अंतिम चार में पहुंचे हैं। उन्होंने साढे तीन घंटे तक चला यह मुकाबला 3 . 6, 7 . 6, 6 . 2, 3 . 6, 6 . 1 से जीता। वह पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम में चौथे दौर से आगे पहुंचे हैं।

उरूग्वे को हराकर कोलंबिया कोपा अमेरिका के फाइनल में

चार्लोट (एजेंसी)। कोलंबिया ने उरूग्वे पर 1 . 0 से तनावपूर्ण जीत के बाद23 साल में पहली बार कोपा अमेरिका फुटबॉल चैम्पियनशिप के फाइनल में प्रवेश कर लिया हालांकि आखिरी सीटी बजने के बाद खिलाड़ियों और दर्शकों के बीच में झड़प हो गई। कोलंबिया के लिये 39वें मिनट में जैफरसन लेरमा ने गोल किया। अब कोलंबिया का सामना रविवार को गत चैम्पियन लियोनेल मेस्सी की अर्जेंटीना से होगा। वहीं उरूग्वे की टीम तीसरे स्थान के मुकाबले में कनाडा से खेलेगी। कोलंबिया इससे पहले 2001 में अपनी मेजबानी में कोपा अमेरिका खिताब जीता था। इस मैच में एक लाल कार्ड के अलावा सात पीले कार्ड दिखाये गए।

दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच काफी धक्का मुक्की देखी गई। मैच के बाद दर्शकों के बीच हुए झगड़े में डारविन नुनेज और उरूग्वे के दर्जनों खिलाड़ी कूद पड़े। एक वीडियो में दिखाया गया कि नुनेज ने कोलंबिया की जर्सी पहने एक प्रशंसक को पीटा।

विम्बलडन फाइनल में अल्काराज का सामना जोकोविच से

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्पेन के कार्लोस अल्काराज ने रूस के दानिल मेदवेदेव को हराकर विम्बलडन फाइनल में प्रवेश कर लिया जहां उनका सामना नोवाक जोकोविच से होगा। अपना 21वां जन्मदिन मनाने से कुछ महीने दूर अल्काराज अगर जीत जाते हैं तो उनका लगातार दूसरा विम्बलडन और चौथा ग्रैंडस्लैम खिताब होगा। उन्होंने मेदवेदेव को 6 . 7, 6 . 3, 6 . 4, 6 . 4 से हराया। जीत के बाद उन्होंने कहा, '' लग रहा है कि अब में नया नहीं हूं। मुझे पता है कि फाइनल में कैसा लगता है। मैं पहले भी खेल चुका हूं और उसी प्रदर्शन को दोहराऊंगा।'' पिछली बार भी फाइनल में उनका सामना जोकोविच से ही था। जोकोविच ने 25वीं वरीयता प्राप्त इटली के लोरेंजो मुसेत्ती को 6 . 4, 7 . 6, 6 . 4 से हराया। जोकोविच के 2014 और 2015 में रोजर फेडरर को हराने के बाद से पहली बार लगातार दो फाइनल समान प्रतिद्वंद्वियों के बीच होगा। जोकोविच इस सत्र में किसी भी टूर्नामेंट के फाइनल में नहीं पहुंच सके हैं।

जून में उन्होंने दाहिने घुटने का आपरेशन भी कराया। उन्हें यहां क्वार्टर फाइनल में वॉकओवर मिला था जब उनके प्रतिद्वंद्वी एलेक्स डि मिनौर ने कूल्हे की चोट के कारण नाम वापिस ले लिया। एटीपी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाले और ग्रास , क्ले और हार्ड तीनों कोर्ट पर खिताब जीतने वाले सबसे युवा खिलाड़ी अल्काराज अब 22 वर्ष की उम्र से पहले दो विम्बलडन खिताब जीतने वाले बोरिस बेकर और ब्योर्न बोर्ग के बाद तीसरे खिलाड़ी बनने से एक जीत दूर है।

झूलन गोस्वामी को महिला सीपीएल में मिली बड़ी जिम्मेदारी, ट्रिनबागो नाइट राइडर्स ने बनाया मेंटॉर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बाद अब वेस्टइंडीज की अपने यहां महिला टी20 क्रिकेट लीग शुरू कर चुका है। अगले महीने की 21 तारीख से विमंस कैरेबियन प्रीमियर लीग के अगले सीजन की शुरुआत होगी। ये लीग 29 अगस्त तक चलेगी। इस लीग में भारत महिला तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी नजर आएंगी। वह एक टीम की मेंटॉर के तौर पर इस लीग में दिखाई देंगी। इस लीग में भारत की कई महिला खिलाड़ी भी खेलेंगी। इस लीग में अभी सिर्फ तीन ही टीमें हैं जिसमें से दो टीमें आईपीएल फेंचाइजियों की टीमें ही हैं। बारबाडोस रॉयल्स विमंस, गुयाना अमेजन वॉरियर्स विमंस और त्रिनबागो नाइट राइडर्स विमंस नाम की तीन टीमें इसमें हिस्सा ले रही हैं। झूलन इसस लीग में त्रिनबागो नाइट राइडर्स की मेंटॉर बनेंगी। झूलन भारतीय घरेलू क्रिकेट में भी बंगाल की महिला टीम की मेंटॉर रह चुकी हैं।

वह विमंस प्रीमियर लीग में मुंबई इंडियंस की मेंटॉर और गेंदबाजी कोच हैं। उनके साथ इस टीम में जेमिमा रोड्रिग्स, शिखा पांडे भी हैं। गोस्वामी ने इसे लेकर कहा कि, इतनी शानदार फेंचाइजी का हिस्सा बनना सम्मान की बात है। नाइट राइडर्स ने भारत में अच्छा किया है और विमंस कैरेबियन प्रीमियर लीग में इस टीम के साथ जुड़ना सम्मान की बात है।

सेमीफाइनल में युवराज सिंह ने ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों की कर दी कुटाई, 9 गेंदों में बना डाले 46 रन

नई दिल्ली (एजेंसी)। युवराज सिंह को भारत के महान ऑलराउंडर्स में गिना जाता है। युवराज अपनी तूफानी बल्लेबाजी के लिए भी जाने जाते थे, वहीं एक बार उन्होंने साबित कर दिया कि उनके जैसा बल्लेबाज बन पाना मुश्किल है। भारत ने 2007 में टी20 वर्ल्ड कप और साल 2011 में वनडे वर्ल्ड कप जीता था। इन दोनों ही टूर्नामेंट में युवराज सिंह को योगदान बेहद अहम था। युवराज ने

अपने बल्ले से जो पारियां खेलीं थी उनकी याद आज भी हर किसी के जहन में है। युवराज को संन्यास लिए कई समय हो गया लेकिन उनकी बल्लेबाजी में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं आया है। दरअसल, युवराज सिंह इन दिनों वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में खेल रहे हैं। युवराज इंडिया चैंपियंस की कप्तानी कर रहे हैं और अपनी कप्तानी में वह टीम को फाइनल में ले गए हैं। सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने ऐसी ताबड़तोड़ पारी खेली कि देखने वालों को विंटेज युवराज याद आ गए। बता दें कि, युवराज ने इस मैच में 28 गेंदों पर 59 रनों की पारी खेली। इससमें से 46 रन तो युवराज ने महज 9 ही गेंदों में बना लिए। युवराज ने इस मैच में पांच छक्के मारे। यानी 30 रन छक्कों से आ गए। वहीं चार गेंदों पर उन्होंने चौके लगाए जिसका मतलब है कि 16 रन उन्होंने महज चौके से बटोरे।

9 गेंदों पर उनके बल्ले से निकले कुल 46 रन। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 210.71 का रहा। युवराज ने इस दौरान अपने वही पुराने शॉट्स दिखआए जो उनकी बल्लेबाजी की खूबसूरती हुआ करती थी। युवराज के बाद युसूफ और इरफान पठान ने अपने बल्ले से जो कोहराम मचाया उसने ऑस्ट्रेलिया चैंपियंस को परेशानी में डाल दिया। इरफान ने तो इस मैच में 18 गेंदों पर ही अर्धशतक जमा दिया। 19वीं गेंद पर वह हालांकि, आउट हो गए। इरफान ने अपनी पारी में तीन चौके और पांच बेहतरीन छक्के मारे। युसूफ ने 23 गेंदों पर नाबाद 51 रन बनाए जिसमें चार चौके और चार छक्के शामिल रहे। इरफान ने 263.15 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए तो युसूफ ने 221.73 की स्ट्राइक रेट से रन बटोरे। रिटायरमेंट के बाद बल्लेबाजों से ऐसी बल्लेबाजी की उम्मीद नहीं रखी जाती लेकिन भारतीय धुरंधरों ने ये कमाल कर दिया। रॉबिन उथप्पा ने भी इस मैच में 65 रन बनाए। इंडिया चैंपियंस ने 20 ओवरों में कुल 6 विकेट खोकर 254 रन बनाए। जबकि ऑस्ट्रेलिया चैंपियंस सात विकेट खोकर 168 रन ही बना सकी।

स्टॉपेज टाइम में गोल करके नीदरलैंड को हराकर यूरो फाइनल में इंग्लैंड

डॉर्टमंड (एजेंसी)। एक गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए स्टॉपेज टाइम में ओली वाटकिंस के गोल के दम पर इंग्लैंड ने नीदरलैंड को 2 . 1 से हराकर यूरो फुटबॉल चैम्पियनशिप 2024 के फाइनल में प्रवेश कर लिया जहां उसका सामना स्पेन से होगा। इंग्लैंड के कोच जेरेथ साउथगेट ने कप्तान हैरी केन की जगह वाटकिंस को मैदान पर बुलाने का साहसिक फैसला लिया और स्टॉपेज टाइम के पहले ही मिनट में उसने गोल करके इसे सही साबित कर दिया। यूरो 2024 के नॉकआउट चरण में इंग्लैंड के लिये जूड बेलिंगहम ने स्टॉपेज टाइम में बराबरी का गोल किया था। इंग्लैंड ने स्लोवाकिया को अंतिम 16 के मुकाबले में हराया और स्विटजरलैंड को पेनल्टी शूट आउट में हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी।

इंग्लैंड ने आखिरी बार 1966 विश्व कप में खिताबी जीत दर्ज की थी जिसके बाद से टीम कोई बड़ा खिताब नहीं जीत सकी है। वाटकिंस इससे पहले इस बार यूरो चैम्पियनशिप में डेनमार्क के खिलाफ ग्रुप मैच में सब्स्टीट्यूट के तौर पर उतरे थे। साउथगेट ने 80वें मिनट में जब उन्हें उतारने का फैसला किया तो सभी को हैरानी हुई। लेकिन यह उनका मास्टर स्ट्रोक साबित हुआ। इंग्लैंड पहली बार विदेश में फाइनल खेलेगा। उसने 1966 विश्व कप वेम्बले स्टेडियम पर जीता था और यूरो 2020 फाइनल भी वहीं खेला गया था जिसमें उसे इटली ने हराया था। नीदरलैंड के लिये 21 वर्ष के जावी सिमंस ने पहला गोल दागा। वहीं केन ने बराबरी का गोल पेनल्टी पर किया।

कोपा अमेरिका सेमीफाइनल मुकाबले में हुई मारपीट

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलंबिया ने उरूग्वे पर 1-0 से तनावपूर्ण जीत के बाद 23 साल में पहली बार कोपा अमेरिका फुटबॉल चैंपियनशिप के फाइनल में प्रवेश कर लिया। हालांकि, आखिरी सीटी बजने के बाद खिलाड़ियों और दर्शकों के बीच में झड़प हो गई। कोलंबिया के लिए 39वें मिनट में जैफरसन लेरमा ने गोल किया। अब कोलंबिया का सामना रविवार को गत चैंपियन लियोनेल मेसी की अर्जेंटीना से होगा। उरूग्वे की टीम तीसरे स्थान के मुकाबले में कनाडा से खेलेगी। कोलंबिया इससे पहले 2001 में अपनी मेजबानी में कोपा अमेरिका खिताब जीता था। इस मैच में एक लाल कार्ड के अलावा सात पीले कार्ड दिखआए गए। दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच काफी धक्का मुक्की देखी गई। मैच के बाद दर्शकों के बीच हुए झगड़े में डारविन नुनेज और उरूग्वे के दर्जनों खिलाड़ी कूद पड़े। एक वीडियो में दिखाया गया कि नुनेज ने कोलंबिया की जर्सी पहने एक फैन को पीटा। इस पूरे मामले के कई वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर हो रहे हैं। दूसरी ओर, टूर्नामेंट का खिताबी मुकाबला कोलंबिया और अर्जेंटीना के बीच 14 जुलाई को मियामी गार्डेन्स, फ्लोरिडा में हार्ड रॉक स्टेडियम में खेला जाएगा। अर्जेंटीना ने कनाडा को 2-0 से हराकर खिताबी मुकाबले के लिए क्वालीफाई किया था। मैच में मेसी ने भी गोल दागा।

केवल अच्छे पैसे देकर ही वेस्टइंडीज क्रिकेट को बेहतर नहीं बनाय जा सकता -लारा

जमैका। वेस्टइंडीज के स्टार बल्लेबाज ब्रायन लारा ने टीम की इंग्लैंड के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में हार पर निराशा जाहिर की है। लारा ने इसके साथ ही कहा है कि हम प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे नहीं ला पा रहे हैं। साथ ही कहा कि केवल अच्छे पैसे देकर ये समस्या हल नहीं हो सकती है। लारा ने सवाल किया कि अगर आप वेस्टइंडीज के बैंक खाते में 100 मिलियन, 200 मिलियन डॉलर डालते हैं, तो क्या इससे हमारा खेल बेहतर हो जाएगा ? मुझे लगता है ऐसा नहीं होगा।

साइना पर टिप्पणी के लिए क्रिकेटर अंगकृष ने माफी मांगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला बैडमिंटन स्टार साइना पर की गयी अपनी टिप्पणी के लिए कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के युवा बल्लेबाज अंगकृष रघुवंशी ने माफी मांगी है। बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल पर की गई अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांगी है। यह पूरा मामला साइना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने से जुड़ा है। इसमें साइना ने देश में अन्य खेलों की तुलना में क्रिकेट की ओर अधिक ध्यान दिये जाने पर चिन्ता जतायी थी। साइना ने इस वीडियों में कहा था, सब लोग जानना चाहते हैं कि साइना क्या कर रही है, पहलवान और मुक्केबाज क्या कर रहे हैं, नीरज चोपड़ा क्या कर रहे हैं। हर कोई इन खिलाड़ियों को जानता है, क्योंकि हमने लगातार प्रदर्शन किया है और हम अखबारों में छाए रहे हैं। मैंने ऐसा किया, मुझे ऐसा लगता है कि यह एक सपने जैसा है जो मैंने भारत में किया क्योंकि यहां स्पोर्टिंग कल्चर नहीं है। साइना ने इसके बाद इस बातचीत में क्रिकेट को भी शामिल कर लिया। उन्होंने कहा- कभी-कभी मुझे लगता है कि क्रिकेट को कुछ ज्यादा ही महत्व मिलता है। वहीं अगर आप बैडमिंटन, बास्केटबॉल, टेनिस और दूसरे खेलों को देखें तो ये शारीरिक रूप से बहुत कठिन हैं। आपके पास शटल उठाने और सर्व करने का भी समय नहीं होता, आप ऐसा महसूस करते हैं। जैसे कि

आप बहुत जोर से साँस ले रहे हों। वहीं मेरा मानना है कि क्रिकेट में कौशल ज्यादा महत्वपूर्ण है। साइना इस वीडियो पर अंगकृष ने सोशल मीडिया पर विवादित कमेंट कर दिया था। ने लिखा, चलो देखते हैं कि बुमराह जब उनके सिर पर 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से बाउंसर मारेंगे तो वह कैसे खेलेंगी। अंगकृषरघुवंशी के इस कमेंट के लिए उनकी काफी आलोचना हुई थी। जिसके बाद इस युवा क्रिकेटर ने अपनी पोस्ट हटाते हुए माफी भी मांगी। उन्होंने साथ ही एक अन्य ट्वीट कर लिखा, सभी लोग मुझे माफ कर दे। मैंने मजाक में ये बात कही थी पर मुझे लग रहा है कि ऐसा मजाक नहीं किया जाना चाहिये था।

सतना में ट्रक ने अर्टिगा कार को टक्कर मारी, सड़क के नीचे तक घसीटता ले गया, पिता-पुत्र समेत चार की मौत, 3 गंभीर

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना-चित्रकूट रोड पर हुए एक सड़क हादसे में शनिवार को चार लोगों की मौत हो गई। जबकि महिलाओं समेत 3 लोग घायल हो गए। मझगवां थाना क्षेत्र में भरगवां मोड़ के पास तेज रफ्तार ट्रक ने अर्टिगा कार को सामने से टक्कर मार दी और काफी दूर तक घसीटता ले गया।

हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई है जबकि एक 22 वर्षीय युवती ने सतना जिला अस्पताल में दम तोड़ दिया है। ड्राइवर समेत कार की अगली सीट पर बैठे दो लोगों के शव गाड़ी में ही फंस गए थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों और राहगीरों की मदद से घायलों को एम्बुलेंस के जरिए अस्पताल भेजा। ट्रक में बुरी तरह फंसी कार को बाहर निकालने के लिए जेसीबी मंगाई गई थी।

चित्रकूट दर्शन करने जा रहा था परिवारः बताया जाता है कि सागर और दमोह से तिवारी और दुबे परिवार के सदस्य चित्रकूट दर्शन के लिए जा रहे थे। इसी बीच भरगवां मोड़ के पास सामने से गलत साइड पर आ रहे ट्रक ने कार नंबर को अपनी चपेट में ले लिया।

अस्पताल में युवती प्राची तिवारी पिता रजनीश तिवारी (22) निवासी दमोह व अक्षांत दुबे पिता अखिलेश दुबे (12) की इलाज के दौरान मौत हो गई। अक्षांश को सतना जिला अस्पताल से बिरला हॉस्पिटल रेफर किया गया था। जबकि मौके पर ही जान गंवाने वालों की शिनाख्त चंद्रभान तिवारी पिता वासुदेव तिवारी (45) निवासी नेहा नगर मकरोनिया सागर तथा सुदामा दुबे पिता भगवानदास दुबे (75) के तौर पर हुई है। हादसे में दो महिलाओं के अलावा बालक दर्श दुबे पिता अविनाश दुबे (10) घायल है।

रिटायर्ड पुलिस कर्मी थे मृतकः बताया जाता है कि मृतक सुदामा दुबे मृतक चंद्रभान द्विवेदी के बहनोई और रिटायर्ड स्ढ्ढ थे जबकि उनके बेटे महेश दुबे तहसीलदार हैं। महेश भी साथ मे ही चित्रकूट की यात्रा कर रहे थे लेकिन वे अन्य लोगों के साथ दूसरी गाड़ी में थे। मृतका प्राची तिवारी उनकी नातिन और मृतक अक्षांत उनका नाती है।

बांदा से लाई जा रही नशे की खेप पकड़ाई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना की सिंहपुर थाना पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए नशे की एक बड़ी खेप पकड़ी है। पुलिस ने सवा 12 लाख रुपए से अधिक की नशीली कफ सिरप समेत एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। हालांकि इस मामले में भाजपाई समेत 3 आरोपी अभी पुलिस के शिकंजे से बाहर हैं।

जानकारी के मुताबिक, सिंहपुर थाना पुलिस ने शुक्रवार और शनिवार की दरमियानी रात ग्राम महतैन के खनगढ़ मोड़ के पास नाकाबंदी कर बिना नंबर के एक पिकअप वाहन में लोड नशीली कफ सिरप आनरेक्स कोडीन फास्फेट की बड़ी खेप पकड़ी। पिकअप में 60 पेटियों के अंदर 7200 शीशी नशीली सिरप लोड थी। वाहन के साथ ड्राइवर दिवाकर कुमार पटेल पिता शिवनाथ पटेल (24) निवासी ग्राम टीकर पटपरहा टोला थाना गोविंदगढ़ जिला रीवा भी पकड़ा गया जबकि उसके दो साथी पुलिस को चकमा देकर भागने में कामयाब हो गए। पुलिस ने पिकअप वाहन तथा 12 लाख 24 हजार रुपए अनुमानित मूल्य की नशीली सिरप जब्त कर ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया।

एसडीओपी विदिता डागर (आईपीएस) ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि बांदा (यूपी) की तरफ से कालिंजर के रास्ते पिकअप वाहन में लोड कर नशे की बड़ी खेप सतना की ओर ले जाई जा रही है। पिकअप में नंबर नहीं है लेकिन उस पर रामलला की कृपा से लिखा हुआ है। सूचना पर सिंहपुर थाना प्रभारी शैलेन्द्र पटेल, कोठी थाना प्रभारी रूपेंद्र राजपूत तथा रैगांव चौकी के सब इंस्पेक्टर आरपी त्रिपाठी, एएसआई शैलेन्द्र डोंगरे तथा अमृतलाल वर्मा को नाकाबंदी-चेकिंग के लिए स्टाफ के साथ भेजा गया।

खनगढ़ मोड़ के पास पिकअप वाहन को रोक कर जब ड्राइवर से पूछताछ शुरू की गई तो उसी दौरान उस पर सवार रहे दो आरोपी भाग निकले। पकड़े गए ड्राइवर दिवाकर पटेल ने उन दोनों के नाम अमित गुप्ता और आशीष गौतम निवासी रैगांव बताए हैं। उसने पुलिस को बताया कि पिकअप में लोड नशीली सिरप की पेटियों में से 25-25 पेटियां अमित गुप्ता तथा आशीष गौतम की थीं जबकि 10 पेटी नशीली सिरप रामपुर बघेलान थाना क्षेत्र के ग्राम जमुना निवासी बादल सिंह को पहुंचाई जानी थीं।

पुलिस ने बताया कि अमित गुप्ता, आशीष गौतम एवं बादल सिंह के खिलाफ बीएनएस की धारा 8 बी, 21, 22 तथा एनडीपीएस एक्ट की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। तीनों फरार आरोपियों की तलाश शुरू कर दी गई है।

नशे में पुलिसकर्मी के हंगामें का सामने आया वीडियो रोड पर लोगों से बहस कर दी मारपीट करने की धमकी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। एक पुलिसकर्मी का शराब के नशे में हंगामा करते हुए वीडियो सामने आया है। वीडियो में स्थानीय लोगों से पुलिसकर्मी की बहस भी साफ तौर पर देखी जा सकती है। पुलिसकर्मी मारपीट करने की बात भी कर रहा है।

वीडियो में दिख रहा है कि पुलिसकर्मी इतना नशे में था कि दो अन्य पुलिसकर्मियों को उसे बाइक पर बैठाकर ले जाना पड़ा। बताया गया कि पुलिसकर्मी स्कूटी लेकर रास्ते पर ही गिर गया। फिर लोगों से विवाद करने लगा। वीडियो में कुछ लोग बिछिया थाना प्रभारी को बुलाने की बात कर रहे हैं। वीडियो में आम लोग पुलिस कर्मी का विरोध करते हुए देखे जा सकते हैं। वीडियो में दिख रहा है कि कुछ ही दूर पर पुलिसकर्मी की गाड़ी खड़ी है। जबकि, यूनिफार्म के साथ पहने जाने वाली टोपी नीचे सड़क पर गिरी हुई है।

सीएसपी रितु उपाध्याय का कहना है कि मामला संज्ञान में आया है। वायरल वीडियो में एक पुलिसकर्मी नशे की हालत में दिख रहा है। जांच के बाद ही पूरे मामले को स्पष्ट कर पाएंगे। अगर किसी

एसजीएमएच में मर्चुरी से मृत महिला के शरीर से जेवर चोरी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संजय गांधी चिकित्सालय में मानवता को शर्मशार करने वाला मामला सामने आया है। स्वास्थ्य मंत्री के गृह जिले के इस बड़े अस्पताल में मृतिका कौशल्या पटेल के मृत शरीर से सोने के लॉकेट व चांदी की पायल मर्चुरी से चोरी हो गई। इस घटना के बाद अस्पताल में हड़कंम मच गया है। परिजनों ने अस्पताल के कर्मचारियों पर चोरी का शंका जाहिर की है। हालांकि इस मामले की रिपोर्ट परिजनों ने नहीं लिखाई है।

घटना के संबंध में बताया जा रहा है मृतिका के पुत्र शिवमूर्ति पटेल निवासी गोरगांव थाना रायपुर कर्चुलियान ने बताया कि उसकी मां की मृत्यु शुक्रवार को रात में होने पर उसका शव मर्चुरी में रखवा दिया। इस दौरान मां के शरीर में जेवर को उतरने लगा तो अस्पताल के कर्मचारियों ने माना कर दिया। इसके बाद सुबह जब शव पोस्टमार्टम उपरांत सौंपा गया है तो मां के गहने गायब थे। इस संबंध में पीड़ित ने कहा कि उसके शिकायत दर्ज नहीं कराई है। अस्पताल के जो कर्मचारी है उनके गहने वापस कर दें। मानवता को शर्मशार करने वाली इस घटना के बाद अस्पताल प्रबंधन पर सवाल उठ रहे है। बता दें कि कोरोना

शेख मुख्तार खान बने अल्पसंख्यक कांग्रेस मऊगंज के जिला अध्यक्ष

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जनपद सदस्य व कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता शेख मुख्तार खान को मऊगंज जिला का अल्पसंख्यक कांग्रेस विभाग के अध्यक्ष पद का दायित्व अल्पसंख्यक कांग्रेस विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद इमरान प्रतापगढ़ी के निर्देशानुसार एवं मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, मध्य प्रदेश विधानसभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल भैया, रीवा जिला के लोकप्रिय पूर्व विधायक सुखेंद्र सिंह बन्ना के साथ मऊगंज जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद्मेश गौतम के अनुशंसा पर नियुक्त किया गया है। शेख मुख्तार की इस नियुक्ति पर अल्पसंख्यक समाज मे हर्ष व्याप्त है। हर्ष व्यक्त करने वालों मे मुख्य रूप से अल्पसंख्यक कांग्रेस विभाग रीवा के जिला अध्यक्ष मुस्तहाक खान, शहर कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष वसीम राजा, पूर्व शहर कार्यकारी अध्यक्ष मकदूम खान, कांग्रेस कमेटी के पूर्व शहर अध्यक्ष अब्दुल शहीद मिस्त्री, नगर निगम पार्षदगण नजमा बेगम, सूफिया बेगम, सहफूज खान, अल्पसंख्य शहर अध्यक्ष अकरम अंसारी, नगर गुढ़ के पार्षद मुमताज खान, पूर्व अध्यक्ष रफीक अंसारी, पूर्व अध्यक्ष माजिद खान, लियाकत अली, गुले अहमद, अजहरूद्दीन अज्जू, इस्तहाक खान आदि लोग शामिल रहें व समाज के लोगों ने पूर्व विधायक सुखेन्द्र सिंह बन्ना का आभार व्यक्त किया।

मछुआ सहकारी समिति पंछा का निर्वाचन कार्यक्रम तय

सदस्यों के चुनाव के लिए प्रक्रिया 19 जुलाई से आरंभ होगी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी एमबी ओझा ने मछुआ सहकारी संस्था पंछा जिला रीवा के संचालक मण्डल के निर्वाचन का कार्यक्रम निर्धारित कर दिया गया है। इसके लिए सहकारी निरीक्षक नीलेश पाण्डेय को रिटर्निंग आफीसर बनाया गया है। संचालक मण्डल के सदस्यों के चुनाव के लिए प्रक्रिया 19 जुलाई से आरंभ होगी। इस दिन महिला पदों का निर्धारण करके संचालक मण्डल के बैठक की सूचना जारी की जाएगी। आमसभा की सूचना 22 जुलाई को जारी की जाएगी। सदस्यों के लिए नामांकन पत्र 29 जुलाई तक लिए जाएंगे। नामांकन पत्रों की जाँच करके वैध सदस्यों की सूची 29 जुलाई को प्रकाशित की जाएगी। नामांकन पत्रों की वापसी के बाद चुनाव लड़ने वाले अंतिम उम्मीदवारों की सूची 31 जुलाई को जारी की जाएगी। इसी दिन उम्मीदवारों को चुनाव प्रतीक आवंटित किए जाएंगे। मछुआ सहकारी समिति की विशेष साधारण सभा में 5 अगस्त को मतदान होगा। मतदान समाप्त होने के बाद ही मतगणना की जाएगी। समिति के शेष रिक्त पदों पर सहयोजन की कार्यवाही 7 अगस्त को की जाएगी। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं अन्य संस्थाओं में भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों के चुनाव की सूचना 7 अगस्त को जारी की जाएगी। इनका निर्वाचन 8 अगस्त को किया जाएगा।

पीएम श्री कालेज का शुभारंभ आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय को पीएम श्री कालेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयन किया गया है। उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल 14 जुलाई को दोपहर 1.30 बजे से आयोजित समारोह में महाविद्यालय का विधिवत शुभारंभ करेंगे। समारोह की अध्यक्षता अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ आरपी सिंह करेंगे।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सांसद श्री जनार्दन मिश्र, विधायक गुढ़ श्री नागेन्द्र सिंह, विधायक सिरमौर श्री दिव्यराज सिंह, विधायक सेमरिया श्री अभय मिश्रा, विधायक मनगवां श्री नरेन्द्र प्रजापति तथा विधायक त्योंथर श्री सिद्धार्थ तिवारी शामिल होंगे। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल तथा महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष श्री प्रबोध व्यास भी उपस्थित रहेंगे। समारोह शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय के नवीन सभागार में आयोजित किया जा रहा है। समारोह में दोपहर 2.15 बजे से इंदौर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह का सजीव प्रसारण भी दिखाया जाएगा। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ आरती सक्सेना ने सभी आमंत्रितों से समारोह में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

किसानों को डीएपी के स्थान पर एनपीके के उपयोग की सलाह

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के कृषकों को सलाह दी गई है कि वह डीएपी के स्थान पर एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी सलाह में कहा है कि डीएपी में केवल दो तत्व नाइट्रोजन व फास्फोरस प्राप्त होते हैं। जबकि एनपीके उर्वरक से फसलों के लिए आवश्यक सभी तीन मुख्य पोषक तत्वों नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की उपलब्धता होती हैं। इस प्रकार एनपीके उर्वरक से नत्रजन एवं स्फुर के अलावा पौधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व पोटाश की पूर्ति किसान भाई सफलतापूर्वक कर सकते हैं। अतः एनपीके उर्वरक का प्रयोग करने पर किसान भाईयों को अलग से पोटाश डालने की जरूरत नहीं पड़ती है व लागत में कमी आती है। उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने किसान भाईयों के लिए डीएपी के स्थान पर एनपीके खाद का उपयोग करने की सलाह दी है।

उप संचालक ने कहा है कि फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग लाभदायक होता है। डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट और एनपीके का उपयोग अधिक लाभदायी है। इससे जमीन को सल्फर की प्राप्ति होती है। सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग खेत की तैयारी के समय किया जाता है। जिससे यह फसलों में अधिक कारगर रहता है। डीएपी में उपलब्ध 18 प्रतिशत नाइट्रोजन में से केवल 15 प्रतिशत नाइट्रोजन तथा 46 प्रतिशत फास्फोरस में से 39 प्रतिशत फास्फोरस पानी में घुलकर मिट्टी को प्राप्त होता है। शेष फास्फोरस मिट्टी में जमा हो जाता है जिससे मिट्टी कठोर हो जाती है। इसकी जल धारण क्षमता घटती है। उप संचालक ने बताया है कि आगामी फसल में शंकर धान एवं शंकर मक्का के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश एनपीके खाद का उपयोग अधिक लाभकारी होगा। दलहन एवं तिलहन फसलों में 80:40:30 एनपीके तथा सल्फर का उपयोग लाभदायी होगा।

उप संचालक ने बताया है कि किसान नैनो तकनीक पर आधारित खाद का भी उपयोग कर सकते हैं। फसलों के लिए 20 प्रतिशत नाइट्रोजन से युक्त नैनो यूरिया तथा 8 प्रतिशत नाइट्रोजन एवं 16 प्रतिशत फास्फोरस से युक्त नैनो डीएपी उपलब्ध है। इनके निर्धारित मात्रा में उपयोग से फसलों को संतुलित मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। सामान्य तौर पर एक स्वस्थ पौधे में नाइट्रोजन की मात्रा 1.5 से 4 प्रतिशत तक होती है। फसलों की बढ़वार की स्थिति में इनमें नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी का पत्तियों में छिड़काव करने से पौधों को कारगर तरीके से नाइट्रोजन और फास्फोरस की उपलब्धता हो जाती है। इनके उपयोग से पैदावार में वृद्धि होती है तथा मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होता है। नैनो यूरिया की 500 मिलीलीटर की बोतल 225 रुपए में तथा नैनो डीएपी की 500 मिलीलीटर की बोतल 600 रुपए में मिल रही है। इसकी कीमत एक बोरी खाद से लगभग आधी है। जबकि इसका असर एक बोरी खाद से भी अधिक है। इसलिए नैनो यूरिया और नैनो डीएपी का उपयोग

आज मिलान के लिये निकलेगा अलम का जुलूस मोहर्रम सरपरस्त कमेटी का ऐलान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। इस्लाम धर्म के आखिरी पैगम्बर परवर दिगार के नायब सरवर-ए-कायनात हज़रत मुहम्मद सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के चहेते नवासे शहीदे आज़म हज़रत इमाम हुसैन रजिअल्लाह तआला अन्हो एवं उनके आल की इस्लाम की बुनियादी वसूलों के खातिर कर्बला की जंग मे हुयी शहादत के याद मे मनाये जाने वाले मोहर्रम त्योहार की तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है। गत दिवस 06 मोहर्रम को पचमठा मार्ग घोघर रीवा में एहसान अब्बासी राजा भाई के घर से मासूम अली असगर के झूले का जुलूस परम्परागत तरीके से निकाला गया। आज 07 मोहर्रम को मोहर्रम का अलम मिलान के लिये अपने-अपने चौक से बाद नमाज़ इशा रात्रि 9 बजे चलेगें, तथा शाहभोलन शरीफ सिटी कोतवाली जायेगें, तथा बाद मिलान सभी अलम जुलूस के रूप मे इकट्ठा होकर फोर्ट रोड अशोक बाबा, सिंधी चौराहा, स्टेचू चौराहा, प्रकाश चौराहा होकर छोटी दरगाह शरीफ पंहुचेगें, तथा वहां से अमहिया स्थित बड़ी दरगाह शरीफ जायेगें। इसी तरह से बिछिया के सभी अलम किला होते हुये शाहभोलन शरीफ, सिटी कोतवाली होकर फोर्ट रोड से छोटी दरगाह आयेगें तथा फातेहा के बाद अपने मुकाम वापस चले जायेगें। उक्त आशय की जानकारी प्रेस को जारी करते हुये कमेटी के सरपरस्त एवं प्रवक्ता एड0 महमूद खान ने बताया कि इसी दिन हुसैनिया कमेटी के जानिब से खुटेही मे अंगूरी बिल्डिंग के पीछे अखाड़ा एवं अलाव (आग मे चलने) का प्रोग्राम होगा। जिला मोहर्रम कमेटी अध्यक्ष शेर खान एवं सचिव इकबाल खान ने मोहर्रम सरपरस्त (संरक्षक) कमेटी की घोषणा कर दी है, जिसके अनुसार सर्व श्री मोहम्मद सलाम नन्हू, हाजी डॉ0 अनीस सिद्दीकी, मोहम्मद मुस्लिम सोनू, डॉ0 अब्दुल मुजीब खान, अकबर निज़ामी, एड0 महमूद खान, मो0 नजीर खान, रफीक रिवानी, अब्दुल शहीद मिस्त्री, हाफिज आरिफ, तौशीफ अहमद, अनस अब्बासी, मो0 इकबाल (चॉद), अंसारूल हक नसीम, एम.डी. खान, मो0 साबिर मंसूरी, रफीक अंसारी, हाफिज जुबैर, सहफूज खान, असगर बेग, डॉ0 कमर रब्बानी, एड0 अशफाक अहमद, अब्दुल वफाती अंसारी, इस्तेयाक अहमद गोले, सलीम खान बुग्गन को सरपरस्त नियुक्त किया गया है। जिला मोहर्रम कमेटी के सभी पदाधिकारियों ने सभी भाइयों

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।